मॉयल भारती

अंक : 6 जुलाई-मार्च, 2022

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अमृत महोत्सव विशेषांक

मॉयल
MOIL

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संपादक मण्डल

मुकुंद पी. चौधरी	उषा सिंह	एन.डी. पाण्डेय	पूजा वर्मा
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक	निदेशक (मानव संसाधन)	कंपनी सचिव	राजभाषा अधिकारी

संपादकीय

संपादकीय

प्रिय पाठकगण!

बहुत–बहुत–बहुत धन्यवाद। आप सभी से यह खुशी साझा करते हुए अत्यंत आनंद हो रहा है कि हम सबकी पत्रिका 'मॉयल भारती' को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है। मॉयल परिवार समेत समस्त अतिथि रचनाकार कोटि–कोटि बधाई के पात्र हैं। आपके ही सृजनात्मक सहयोग, सुझाव एवं प्रतिक्रियाओं ने पत्रिका को उतरोत्तर समृद्ध बनाया है। पत्रिका से जुडे सभी पक्षों का आभार।

अब तक के 5 अंकों की सफल यात्रा पूरी करते हुए यह अंक भी आपकी सेवा में प्रस्तुत है। पत्रिका की सामग्री में हरबार की तरह स्थायी सामग्री का समावेश तो है ही, नयी गतिविधियों एवं उपलब्धियों को भी सम्मिलित किया गया था। इस बार महत्वपूर्ण ऐतिहासिक वेतन समझौते की भी चर्चा रखी गयी है ताकि हिंदी के माध्यम से कर्मचारी हित की बातों का व्यापक प्रसार हो सके। माननीय इस्पात मंत्री महोदय जी का सम्बोधन भी प्रेरणादायक है। मॉयलकर्मियों की ओर से आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पर्याप्त सामग्री प्राप्त हुई है जिसे यथोचित स्थान दिया गया है। राजभाषा संबंधी सामग्री को भी शामिल करते हुए पत्रिका के इस अंक को तैयार किया गया है।

मॉयल भारती को इस मुकाम तक पहुँचाने में आप सभी का योगदान ही संजीवनी बना है। विश्वास है इस बार भी आपकी प्रतिक्रिया हमारा मार्गदर्शन करेगी। कोरोनाकाल में भी आपसे संपर्क बना रहे इसलिए पत्रिका का ई–संस्करण कंपनी की वेबसाइट और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की वेबसाइट पर दर्शाया गया है। आने वाले पर्वो की हार्दिक शुभकामनाओं सहित साभार धन्यवाद।

जय भारत, जय राजभाषा!

(पूजा वर्मा)
संपादक – मॉयल भारती

अनुक्रमणिका

1. संपादक मंडल.....01
2. संदेश.....02–07
3. माननीय इस्पात मंत्री की का संबोधन.....08–09
4. राजभाषा नियम 1976.....10–11
5. राजभाषा नियम 1976 / कविता / स्लोगन.....12
6. हिंदी पखवाड़ा–2021.....13
7. राजभाषा कीर्ति पुरस्कार.....14–15
8. शब्दावली (अँग्रेजी–हिंदी–मराठी).....16–17
9. विदेशी अभिव्यक्तियाँ.....18–19
10. हिंदी दिवस (14 सितंबर) / हिंदी दिवस.....20–21
11. प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन.....22–23
12. ऐतिहासिक त्रिपक्षीय समझौता.....24–25
13. पेड़–पौधे और हम.....26
14. समझो, करो और जीतो.....27
15. जलवायु परिवर्तन और टिकाऊ विकास.....28–29
16. ऊँची भरो उड़ान / अब है तो है.....30
17. कविता–कब किसी..... / अपने पिता के नाम.....31
18. बेटी.....32
19. कविता : 'पेंसिल की नोंक' व अन्य.....33
20. आज़ादी का अमृत महोत्सव.....34–35
19. हिंदी हैं हम / मेरा अंश मेरी बेटी.....36–37
20. आज़ादी का अमृत महोत्सव / राष्ट्रवंदन है आजादी का अमृत महोत्सव.....36–39
21. बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं / सृष्टी हमें चलानी है.....40–41
22. आज़ादी का अमृत महोत्सव.....42
23. इक्कीसवीं सदी तो बेटियाँ उन्नीस क्यों रहें?.....43
24. लड़की अबला नही / बेटी बचाओं.....44–45
25. बेटी का विवाह.....46
26. ताश का मर्म.....47
27. मेरा गर्भ.....48
28. पोरी संगोपन.....49
29. माता–पिता को समर्पित.....50–51
30. भाग्य से बड़ा कुछ भी नहीं.....52–53
31. भारतीय समाज / डियर जिंदगी.....54
32. चल उठ.....55
33. परख क्वालिटी सर्कल.....56
34. कार्यशाला में सुरक्षा एवं सावधानियाँ.....57
35. विभिन्न गतिविधियों के चित्र.....58–59
36. हिंदी मेरा अभिमान.....60

सिक्ख गुरूओं ने आपातकाल में हिंदी की रक्षा के लिये ही गुरुमुखी रची थी। – संतराम शर्मा।

मुकुंद पी. चौधरी
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1ए काटोल रोड,
नागपुर-440013

संदेश

सर्वप्रथम मैं आप सभी को नव वर्ष 2022 की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि मॉयल लिमिटेड के राजभाषा विभाग की पत्रिका 'मॉयल भारती' के छठवे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी शुरू से ही अनेक बोलियों, क्षेत्रों, जातियों और धर्मो के लोगो की भाषा रही है। उसका कोई सीमित और परिभाषित क्षेत्र भी नहीं है। यह भारत की सामाजिक संस्कृति की भाषा रही है। जिस प्रकार हिंदी भाषियों की संख्या में दिन प्रतिदिन बढ़ोत्तरी हो रही है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि आज हिंदी केवल भारत की भाषा न होकर विश्व के एक बड़े समुदाय की भाषा के रूप में विकसित हो रही है ।

मैं पत्रिका के छठवे अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिको का अभिनंदन करते हुए आप सभी को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

(मुकुंद पी. चौधरी)

हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है। - मौलाना हसरत मोहानी।

राकेश तुमाने
निदेशक (वित्त)
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1ए काटोल रोड,
नागपुर-440013

संदेश

आप सभी को नव वर्ष 2022 की हार्दिक शुभकामनाएं। भारत की एकता का कारण ऐतिहासिक, धार्मिक, आध्यात्मिक समरूपता में है, जहां उसने हर धर्म, पंथ, समुदाय को अपनाकर अपनी संस्कृति में ढाल लिया और साथ में विभिन्न समुदायों, भाषाओं को विकसित होने का अवसर भी दिया। भारत की इसी सामासिक संस्कृति की वाहक भाषा के रूप में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है, जिसे हिंदी बखूबी निभा रही है।

पत्रिका के छठवे अंक के लिए बधाई देता हूँ और 'मॉयल भारती' निरंतर लोकप्रियता एवं उपयोगिता की सीढ़ियाँ चढ़ती रहे, ऐसी कामना करता हूँ।

(राकेश तुमाने)

उषा सिंह
निदेशक (मानव संसाधन)

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1ए काटोल रोड,
नागपुर-440013

संदेश

प्रिय हिन्दी प्रेमियों !

आप सभी को नव वर्ष 2022 की हार्दिक शुभकामनाएं। भारत में जनता के साथ संवाद का सबसे सुगम माध्यम हिंदी है और वह राजभाषा के रूप में समाज के प्रत्येक वर्ग तक अपनी पहुंच बना चुकी है। सरकार के विभिन मंत्रालयों एवं विभागो द्वारा संचालित जन कल्याण की विभिन योजनाओं की जानकारी आम नागरिकों को अब हिंदी में भी उपलब्ध होने लगी है। यह सर्वसिद्ध है कि हिंदी भाषा के प्रसार से पूरे देश में एकता की भावना और मजबूत होगी। अतः सभी से आग्रह है कि वे अपने कामकाज एवं बोलचाल की भाषा में भी हिंदी को प्रेमपूर्वक अपनाएं।

मुझे उम्मीद ही नहीं पूरा विश्वास है की हम अपने प्रयासों से राजभाषा प्रगति को सर्वोत्कृष्ठ स्थिति पर ले जाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। मॉयल भारती' पत्रिका के साहित्य विशेषांक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

उषा सिंह

(उषा सिंह)

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिये आवश्यक है। - महात्मा गांधी।

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1ए काटोल रोड,
नागपुर-440013

पी.व्ही.व्ही. पटनायक
निदेशक (वाणिज्य)
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

संदेश

नव वर्ष 2022 की हार्दिक शुभकामनाएं। मुझे अत्याधिक हर्ष हो रहा है कि मॉयल लिमिटेड की राजभाषा विभाग की पत्रिका मॉयल भारती' के छठवे अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। यह राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने हेतु सक्रिय कदम है।

इस पत्रिका के माध्यम से कार्यालय की गतिविधियां तथा राजभाषा का प्रचार–प्रसार हेतु किए जा रहे प्रयासों के लिए तथा मॉयल भारती' के छठवे अंक की सफलता के लिए हार्दिक शुभकमनाएं देता हूँ।

(पी.व्ही.व्ही. पटनायक)

अधिक अनुभव, अधिक विपत्ति सहना, और अधिक अध्ययन, ये ही विद्वता के तीन स्तंभ हैं। - डिजरायली।

एम. एम. अब्दुल्ला
निदेशक (उत्पादन एवं योजना)
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1ए काटोल रोड,
नागपुर-440013

संदेश

आप सभी को नव वर्ष 2022 की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। हिन्दी हमारी राष्ट्रीय पहचान होने के साथ–साथ हमारी सांस्कृतिक समृद्धि और विरासत का प्रतीक भी है। संविधान में हिन्दी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया गया है इसलिए हम सभी का संवैधानिक कर्तव्य है कि हम अपना सरकारी कामकाज हिन्दी मे ही करें। हिन्दी में कामकाज बढ़ाने के लिए अधिकारी और कर्मचारी मौलिक रूप से हिन्दी में कामकाज करने का प्रयास करें तभी राजभाषा की वास्तविक प्रगति संभव है।

राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका मॉयल भारती' से जुड़े सभी संपादक मंडल तथा लेखकगण एवं विभिन रचनाकारों का अभिनंदन करते हुए मैं मॉयल भारती' पत्रिका की सफल प्रकाशन की हार्दिक कामना करता हूँ।

(एम एम अब्दुल्ला)

हिन्दी भाषा और साहित्य ने तो जन्म से ही अपने पैरों पर खड़ा होना सीखा है। – धीरेन्द्र वर्मा।

प्रदीप कामले
मुख्य सतर्कता अधिकारी
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1ए काटोल रोड,
नागपुर-440013

संदेश

आप सभी को नव वर्ष 2022 की हार्दिक शुभकामनाएं। मेरा मानना है कि हिन्दी के प्रचार–प्रसार को उत्तरोतर बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि हम हिन्दी को अपनी मूल चिंतन प्रक्रिया का माध्यम बनाएं एवं वार्तालाप और संवाद के साथ–साथ लेखन कार्य में भी अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग करें। हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो हमें एक–दूसरे से जोड़ती है। यह देश में सबसे अधिक बोली व समझी जाने वाली भाषा है जो विश्व स्तर पर भारत देश की संस्कृति को उजागर करती है।

पत्रिका को सफल बनाने में इस कार्यालय के सभी रचनाकारों को तथा निरंतर हिंदी में प्रचार–प्रसार में अपना दायित्व निभाती हुई यह पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति करें इसके लिए मैं शुभकामनाएं देता हूँ ।

प्रदीप

(प्रदीप कामले)

माननीय इस्पात मंत्री जी का सम्बोधन

दिनांक 31 अक्टूबर, 2021 को नागपुर में आयोजित एक भव्य समारोह में श्री नितिन गडकरी, माननीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री और श्री रामचंद्र प्रसाद सिंह, माननीय इस्पात मंत्री, भारत सरकार द्वारा मॉयल श्रमिकों के लिये एक बड़ी घोषणा की गई। इसमें कर्मचारियों का वेतन समझौता भी शामिल था।

यह वेतन संशोधन 10 साल की अवधि 01.08.2017 से 31.07.2027 तक के लिए है, जिससे लगभग 5,800 कंपनी कर्मचारी लाभान्वित होंगे। यह प्रबंधन और मॉयल के मान्यता प्राप्त संघ यानी मॉयल कामगार संगठन (MKS) के बीच हुए एक समझौता ज्ञापन पर आधारित है। प्रस्ताव में 20% का फिटमेंट लाभ और 20% की दर से अनुलाभ भत्ते शामिल हैं। कंपनी द्वारा मई, 2019 से बेसिक और डीए के 12% की दर से अंतरिम राहत दी गई।

कंपनी के लाभ और हानि खाते पर इसका कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि इस वेतन वृद्धि के लिए लेखा–पुस्तकों में पूरा प्रावधान पहले ही किया गया है। प्रस्तावित वेतन संशोधन का कुल वित्तीय प्रभाव लगभग रु. 87 करोड़ प्रति वर्ष होगा। कंपनी 1 अगस्त, 2017 से 30 सितंबर, 2021 तक की अवधि का बकाया राशि का भुगतान एक बार में ही कर देगी, जिससे लगभग 218 करोड़ रुपये का वित्तीय प्रभाव पड़ेगा।

इसके अलावा, सभी कर्मचारियों के लिए वर्ष 2020–21 के लिए उत्पादन से जुड़ा बोनस रुपये 28,000/– बोनस की भी घोषणा की, जिसका भुगतान दीपावली के पहले किया जाएगा।

इस अवसर पर माननीय मंत्रियों ने मॉयल की विभिन्न सुविधाओं का जिसमें चिकला खान में द्वितीय वर्टीकल शाफ्ट एवं चिकला, गुमगाँव, डोंगरी बुजुर्ग, तिरोड़ी एवं कान्द्री खान में नए अस्पताल एवं तिरोड़ी खान में नए प्रशासनिक भवन का उदघाटन किया गया तथा बालाघाट में ग्रेजुएट ट्रेनी हॉस्टल की सुविधा उपलब्ध करना शामिल है।

हिंदी का काम देश का काम है, समूचे राष्ट्रनिर्माण का प्रश्न है। – बाबूराम सक्सेना।

केन्द्रीय इस्पात मंत्री श्री रामचंद्र प्रसाद सिंह ने कहा,

"आज हमारे देश में जरूरत का 50 फीसदी इस्पात का ही उत्पादन हो रहा है, शेष 50 फीसदी इस्पात के आयात को घटाकर आत्मनिर्भर बनना पहली प्राथमिकता है।"

कार्यक्रम के सुअवसर पर नागपुर के सांसद और केन्द्रीय सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी ने कहा,

"महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश में मैंगनीज की कमी नहीं है। हमें बाहर से आयात की जरूरत ही नहीं पड़नी चाहिए। नई खदानें शुरू करने और उत्पादन बढाने पर जोर देना चाहिए इससे आयात भी घटेगा और रोजगार के नए अवसर भी उपलब्ध होंगे।

इस अवसर पर श्री फग्गन सिंह कुलस्ते, केंद्रीय इस्पात और ग्रामीण विकास राज्य मंत्री, श्री सुनील केदार, राज्य के केंद्रीय पशुपालन, डेयरी विकास, खेल और युवा कल्याण मंत्री, डॉ विकास महात्मे, राज्यसभा सांसद सुश्री सुकृति लेखी अतिरिक्त सचिव एवं वित्त सलाहकार, इस्पात मंत्रालय और सुश्री रुचिका गोविल, अतिरिक्त सचिव सहित कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

कर्मचारी और विभिन्न यूनियन के सदस्य गणमान्य अतिथियों को सुनने के लिए बड़ी संख्या में एकत्रित हुए थे। वे इन घोषणाओं से अत्यधिक प्रसन्न हुए और उन्होंने इस्पात मंत्रालय को तहे दिल से धन्यवाद दिया।

कंपनी के कार्यों एवं उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए बताया गया कि मॉयल लिमिटेड भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत एक अनुसूची–ए, मे शामिल श्रेणी– की एक मिनीरत्न सीपीएसई है। मॉयल देश में मैंगनीज अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक है और महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश राज्य में ग्यारह खदानों का संचालन करता है। मॉयल के पास देश के 34% मैंगनीज अयस्क का भंडार है और यह घरेलू उत्पाद में 45% योगदान दे रहा है। कंपनी का वित्त वर्ष 2025–26 तक अपने उत्पादन को लगभग दोगुना करके 25 लाख मीट्रिक टन करने की महत्वाकांक्षी योजना है। मॉयल कारोबार के अवसर खोजने के लिये गुजरात के साथ–साथ मध्य प्रदेश, राजस्थान और ओडिशा राज्य में भी कदम रखने के लिये प्रयत्नशील है।

इस अवसर पर माननीय केंद्रीय इस्पात मंत्री, श्री सिंह ने मॉयल को लगातार अच्छे प्रदर्शन के लिए बधाई दी और भविष्य में और भी बड़ी उपलब्धि हासिल करने हेतु तैयार रहने का भी आवाहन किया।

राजभाषा नियम, The Official Language Rules, 1976

1. हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर–

नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी, हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे ।

2. हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग–

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजे हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

3. आवेदन, अभ्यावेदन आदि–

1. कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है।

2. जब उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट कोई आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में किया गया हो या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर किए गए हों, तब उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाएगा।

3. यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाहियां भी हैं) से संबंधित कोई आदेश या सूचना,जिसका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, यथास्थिति, हिन्दी या अंग्रेजी में होनी चाहिए तो वह उसे असम्यक विलम्ब के बिना उसी भाषा में दी जाएगी।

4. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना –

1. कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

2. केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिन्दी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।

3. यदि यह प्रश्न उठता है कि कोई विशिष्ट दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं तो विभाग या कार्यालय का प्रधान उसका विनिश्चय करेगा।

4. उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, केन्द्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा,जिन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाएगा ।

5. हिन्दी में प्रवीणता–

यदि किसी कर्मचारी ने– मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली हैयया

इ. स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया होय या

अकबर से लेकर औरंगजेब तक मुगलों ने जिस देशभाषा का स्वागत किया वह ब्रजभाषा थी। -रामचंद्र शुक्ल।

ब. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है ।

6. हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान–

यदि किसी कर्मचारी ने–

अ. मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है या

ब. केन्द्रीय सरकार की हिन्दी परीकाा योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है या

क. केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है या

इ. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

1. यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

2. केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।

3. केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा।

7. मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि –

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

1. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।

2. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

राजभाषा नियम, 1976 हिंदी के अनुमाननतः ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा – क, ख, ग में परिभाषित किया गया है।

भाषा क्षेत्र	राज्य / संघ क्षेत्र
'क' क्षेत्र	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड़, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य हैं।
'ख' क्षेत्र	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य
'ग' क्षेत्र	उपरोक्त निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाएं

1. असमिया
2. उड़िया
3. उर्दू
4. कन्नड़
5. कश्मीरी
6. कोंकणी
7. गुजराती
8. डोगरी
9. तमिल
10. तेलुगू
11. नेपाली
12. पंजाबी
13. बांग्ला
14. बोड़ो
15. मणिपुरी
16. मराठी
17. मलयालम
18. मैथिली
19. संथाली
20. संस्कृत
21. सिंधी
22. हिंदी

कविता

संस्कृत की एक लाड़ली बेटी है ये हिन्दी
बहनों को साथ लेकर चलती है ये हिन्दी
सुंदर है, मनोरम है, मीठी है, सरल है,
ओजस्विनी है और अनूठी है ये हिन्दी
पाथेय है, प्रवास में परिचय का सूत्र है,
मैत्री को जोड़ने की सांकल है ये हिन्दी
पढ़ने व पढ़ाने में सहज है, ये सुगम हैं।
साहित्य का असीम सागर है ये हिन्दी
तुलसी, कबीर, मीरा ने इसमें ही लिखा है,
कवि सूर के सागर की गागर है ये हिन्दी।
निश्चय ही वंदनीय माँ–समान है ये हिन्दी।
अंग्रेजी से भी इसका कोई बैर नही है,
उसको भी अपनेपन से लुभाती है ये हिन्दी
यूँ तो देश में कई भाषाएं है हिन्दी के अलावा,
पर राष्ट्र के माथे की बिन्दी है ये हिन्दी।

स्लोगन

बदलना है हिन्दी को, सर्वसुलभ बनाना है,
कम्प्युटर, मोबाईल, मषीनो में ले जाना है।

हिन्दुस्तान को अग्रेजो से हिन्दी ने आज़ाद कराया है।
राश्ट्रभाशा बन भारत को सजाया है

उत्तर, दक्षिण, पूरब, पष्चिम बोले दुनिया सारी,
सबसे प्यारी, सबसे न्यारी,हिन्दी है भाशा हमारी।

हिन्दी हमारी षान है, हिन्दी हमारी पहचान है,
सारे देष को जोड़ती, हिन्दी तो महान है।

उज्वला वानखेडे, मॉयल, नागपुर

हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है। – वी. कृष्णस्वामी अय्यर।

हिंदी पखवाड़ा-2021

14 सितम्बर 2021 को निदेशक वित्त, निदेशक वाणिज्य, मुख्य सतर्कता अधिकारी, कार्यपालक निदेशक तकनीकी महाप्रबंधक यांत्रिकी एवं मॉयल कामगार संगठन के महामंत्री के करकमलो से दीप प्रज्जवलित करके पखवाड़ा का शुभारंभ किया गया।

निदेशक वित्त ने सभी को यह जानकारी दी कि 14 सितम्बर, 2021 को गृह मंत्रालय भारत सरकार राजभाषा विभाग द्वारा विज्ञान भवन में 'मॉयल भारती' पत्रिका को राष्ट्रीय स्तर पर गृहमंत्री जी द्वारा सम्मानित किया गया। यह हम सभी के लिए गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि हिन्दी बहुत ही सरल व सहज भाषा है। हर देश अपनी भाषा पर गर्व करता है और उसे ज्यादा से ज्यादा अपनाता है। हिन्दी हमारी मातृ भाषा है हमें अपना संपूर्ण कार्य हिंदी में ही करना चाहिए।

हिन्दी भाषा दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा है। दुनिया में संस्कृत पुरातन भाषा है और उसके बाद जल्द ही देवनागरी लिपि का अस्तित्व आया, जिसे आज हम हिंदी के लिए भी प्रयोग करते हैं। हिंदी संस्कृत भाषा का सरल रूप है यह हमारी राजभाषा है। किसी देश की भाषा उसकी उन्नति का मार्ग होती है। आइए! हम इसे ज्यादा से ज्यादा अपनाये और उन्नति के पथ पर अग्रसर हों। इस्पात मंत्री एवं गृह मंत्री के संदेश को सभी के सामने प्रस्तुत किया गया।

मुख्य सतर्कता अधिकारी ने संबोधित करते हुये कहा कि हम अपने दैनिक कार्य को हिंदी में ही बहुत सरल तरीके से कर सकते हैं। क्योंकि हिंदी हमारे देश में सर्वाधिक बोली व समझी जाने वाली भाषा है। साथ ही साथ, सभी प्रतिभागियो को पखवाडा के दौरान आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

मॉयल कामगार संगठन के महामंत्री ने हिन्दी के महत्व व सरलता को बताते हुये कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा है। हम हिंदी में ही अपने कार्यो को सरल रूप से कर सकते हैं।

पखवाडा के दौरान आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिता की सभी को जानकारी दी गई तथा अनुरोध किया गया कि आप ज्यादा से ज्यादा संख्या में भाग लें। शुभारंभ के दौरान कार्यपालक निदेशक (तकनीकी), महाप्रबंधक (वित्त), महाप्रबंधक (यांत्रिकी), महाप्रबंधक (विद्युत), सं.महाप्रबंधक वित्त एवं सभी वरिष्ठ अधिकारी कर्मचारी एवं कामगार संगठन के प्रतिनिधि एवं महिलाए उपस्थित रहीं।

राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है। – बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'।

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

आयोजन : देश में हर साल 14 सितंबर का दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिंदी उन भाषाओं में शुमार होती है जो दुनिया में सबसे ज्यादा बोली और समझी जाती है। इस अवसर पर नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में हिंदी दिवस समारोह और पुरस्कार वितरण का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने किया। गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय, श्री अजय कुमार मिश्रा और श्री निशिथ प्रमाणिक समारोह में विशेष अतिथि के रूप में मौजूद थे।

हिंदी दिवस पर होने वाले इस आयोजन में श्री अमित शाह के कर–कमलों से राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और राजभाषा गौरव पुरस्कार वितरित किए गये। इस अवसर पर श्री शाह ने समारोह को संबोधित भी किया। कोरोना महामारी की विषम परिस्थितियों के कारण विगत वर्ष इस कार्यक्रम का आयोजन नहीं हो सका था। इसलिए इस वर्ष होने वाले समारोह में साल 2018–19, 2019–20 और 2020–21 के दौरान राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों आदि को राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट लेख और पत्रिकाएं प्रकाशित करने वाले संस्थानों को पुरस्कार दिए गये।

मॉयल भारती को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार : इस शीर्ष कार्यक्रम के दौरान वर्ष 2020–21 के लिए राष्ट्रीय स्तर पर मॉयल लिमिटेड की 'ख' क्षेत्र की पत्रिका 'मॉयल भारती' को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। मॉयल लिमिटेड की ओर से निदेशक (मानव संसाधन) श्रीमती उषा सिंह ने पुरस्कार ग्रहण किया।

मॉयल भारती की यात्रा : मॉयल लिमिटेड का राजभाषा अनुभाग राजभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु प्रत्येक छमाही में, हिंदी गृह पत्रिका 'मॉयल भारती' का प्रकाशन करता है। अब तक इस छमाही पत्रिका के 05 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इस प्रकाशन के माध्यम से राजभाषा अनुभाग का यह प्रयास रहता है कि अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति उत्साह और ज्ञान का विकास हो सके। पत्रिका में राजभाषा संबंधी जानकारी के अलावा सरकारी कामकाज में प्रयोग होने वाले शब्दों, वाक्यांशों एवं अद्यतन नियमों की जानकारी उपलब्ध करायी जाती है ताकि कार्मिकों के दैनिक कामकाज में यह सहयोगी बन सके। साथ ही कर्मचारियों की अभिव्यक्ति को सबल बनाने के लिए भी साहित्यिक सामग्री एवं नवलेखन पर भी ध्यान दिया जाता है। इससे कार्मिकों में उत्साह तो बढ़ता ही है, राजभाषा के प्रति लगाव भी बढ़ जाता है।

विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है। – वाल्टर चेनिंग।

मॉयल भारती का ई–संस्करण : भारत सरकार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग के दिनांक 15 मई 2019 के आदेश के अनुसार केंद्र सरकार के सभी विभागों को यह निर्देश दिए गए हैं कि उनके कार्यालय से प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिकाओं को अनिवार्य रूप से ई–पत्रिका के रूप में भी प्रकाशित किया जाए। साथ ही उसे राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर अपलोड किया जाना सुनिश्चित किया जाए। इससे कार्यालय की गृह पत्रिकाएं अधिक से अधिक लोगों तक डिजीटल फॉर्म में पहँच सकेंगी और इससे कागजी बचत होने के साथ–साथ विलंब और अन्य खर्चों से भी बचा जा सकेगां

राजभाषा विभाग के उपर्युक्त आदेश के अनुपालन में, मॉयल लिमिटेड ने इस सुझाव को अपनाते हुए गृह पत्रिका के अंकों को ऑनलाइन करना शुरू कर दिया है। यह सुखद आश्यर्च है कि नागपुर स्थित कार्यालयों में मॉयल लिमिटेड अपनी हिंदी पत्रिका को ऑनलाइन उपलब्ध कराने में सबसे आगे रहा। इस सफलता से अब पाठकगण इस पत्रिका को राजभाशा विभाग की वेबसाइट पर जाकर डिजीटल फॉर्म पढ़ सकते हैं। इससे पत्रिका का रूप भी निखर रहा है और साथ ही प्रबृद्धजनों की प्रतिक्रिया से पत्रिका की सामग्री भी गुणवत्तापूर्ण बन रही है।

प्रविष्टियों हेतु मानक : हिंदी पत्रिकाओं को पुरस्कार के लिए चयन करने हेतु निर्धारित मानकों को पूरा करना होता है। राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित मानकों का पूरा होना अनिवार्य है–

1. पत्रिका में कम से कम 40 पृष्ठ होने चाहिए।
2. हिंदी में पृष्ठों की कुल संख्या कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या का कम से कम 8 प्रतिशत होना चाहिए
3. पत्रिका के 01 अप्रैल, 2020 से 31 मार्च, 2021 की अवधि के दौरान कम से कम 02 अंक प्रकाशित होने चाहिए।

4. राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध लिंक ''ई–पत्रिका पुस्तकालय'' पर अपलोडिड ई–पत्रिका भी इस पुरस्कार के लिए पात्र है।

कंपनी की पत्रिका मॉयल भारती उपर्युक्त मानकों के अनुरूप है। पत्रिका का संयोजन करते समय इस बात को भी पूरा ध्यान दिया जाता है कि पत्रिका का राजभाषा का बढ़ावा देने में उपयोगिता बनी रहे, संकलित सामग्री का सरकारी कामकाज में उपयोग हो। रचनाओं की भाषा–शैली, एवं प्रस्तुति उतरोत्तर बेहतर हो, विन्यास, साज–सज्जा, कागज की गुणवत्ता एवं मुद्रण–स्तर आकर्षक हो। आंतरिक कार्मिकों द्वारा लेखों को अनुपात भी अपेक्षाकृत ठीक हो तथा प्रकाशित किए जा लेखों की मौलिकता भी हो। इस प्रकार से मॉयल भारती को हर बार पहले से अच्छा बनाने के लिए पाठकों एवं सहयोगियों से निरंतर परामर्श लेते हुए पत्रिका के अब तक 5 अंक सफलतापूर्वक प्रकाशित हो चुके हैं।

आभार : इस पत्रिका को प्राप्त राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के लिए प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले हर पक्ष बधाई का पात्र है। पत्रिका के संयोजन में कंपनी के अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक के नेतृत्व एवं निदेशक(मानव संसाधन) का मार्गदर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण है। कंपनी के मुख्यालय सहित विभिन्न खान क्षेत्रों से अपनी रचनाओं से पत्रिका को समृद्ध करने वाले कार्मिकों का भी आभार है जिन्होंने अपने रचनात्मक प्रयासों से मॉयल भारती को विजयी बनाया। अतिथि रचनाकारों को उनके विशेषज्ञ आलेखों के लिए भी धन्यवाद है। तत्परता से मुद्रण का सहयोग देने के लिए पत्रिका के विभिन्न अंकों के मुद्रकों को भी धन्यवाद देना अपरिहार्य है। यह पुरस्कार सभी का है जिन्होंने इस पत्रिका पर चिन्तन किया हो या चित्रित किया हो।

हिंदी को तुरंत शिक्षा का माध्यम बनाइये। – बेरिस कल्यएव।

शब्दावली

क्र	अँग्रेजी	हिंदी	मराठी
1	abnormal demand	अनुचित मांग	असामान्य मागणी
2	above average	औसत से अधिक	सरासरीपेक्षा जास्त
3	absence	अनुपस्थित	अनुपस्थिती
4	absolute	पूर्ण	पूर्ण
5	academic	शैक्षिक	शैक्षणिक
6	accept	स्वीकार	स्वीकार
7	accident	दुर्घटना	अपघात
8	accurate	शुद्ध	अचूक
9	achievement	उपलब्धि	यश
10	acquit	दोषमुक्त	बंदी
11	action plan	कार्य योजना	कृती योजना
12	activate	सक्रिय करना	सक्रिय करा
13	activity	गतिविधि	क्रियाकलाप
14	actual	वास्तविक	वास्तविक
15	adjustment	समायोजन	समायोजन
16	administer	प्रशासन	प्रशासन
17	advance	अग्रिम	अग्रिम
18	advantage	लाभ	फायदा
19	advertisement	विज्ञापन	जाहिरात
20	advise	सलाह देना	सल्ला द्या
21	affidavit	शपथ–पत्र	शपथपत्र
22	afford	वहन कर सकना	परवडणे
23	agenda	कार्य सूची	अजेंडा
24	agreement	समझौता	करार
25	allow	अनुमति	परवानगी द्या

देश को एक सूत्र में बाँधे रखने के लिए एक भाषा की आवश्यकता है। – सेठ गोविंददास।

शब्दावली

क्र	अँग्रेजी	हिंदी	मराठी
26	alternative	विकल्प	पर्यायी
27	amendment	संशोधन	दुरुस्ती
28	analysis	विश्लेषण	विश्लेषण
29	annexure	संलग्नक	जोडपत्र
31	backdated	पूर्व दिनांकित	मागील दिनांक
32	back reference	पिछला संदर्भ	मागील संदर्भ
33	bargain	सौदा करना	सौदा
34	base	आधार	बेस
35	basic	मूल	मूलभूत
36	basic pay	मूलवेतन	मूलभूत वेतन
37	beneficiary	लाभार्थी	लाभार्थी
38	benevolent fund	हितकारी निधि	उदार फंड
39	betterment	उन्नति	सुधारणा
40	blame	दोषी ठहराना	दोष
41	board of directors	निदेशक मंडल	संचालक मंडळ
42	bonded labour	बंधुआ मजदूर	बंधनकारक श्रम
43	breach of discipline	अनुशासन–भंग	शिस्त उल्लंघन
44	brief	संक्षिप्त	थोडक्यात
45	budget allocation	बजट आवंटन	बजेट वाटप
46	budget provision	बजट प्रावधान	बजेट तरतुदी
47	campaign	प्रचार अभियान	मोहिम
48	capability	सामर्थ्य	क्षमता
49	capture	पकड़ना	पकड़ा
50	carry forward	आगे ले जाना,	पुढे जा

विदेशी अभिव्यक्तियाँ

क्र	अँग्रेजी	हिंदी
1.	ab intio	आरंभ से, आदितः
2.	ad hoc	तदर्थ
3.	ad hoc benefit	तदर्थ हितलाभ
4.	ad hoc claim	तदर्थ दावा
5.	ad hoc committee	तदर्थ समिति
6.	ad hoc indent	तदर्थ मांगपत्र
7.	ad hoc payment	तदर्थ भुगतान
8.	ad hoc promotion	तदर्थ पदोन्नति
9.	ad interim	अंतरिम
10.	ad valorem	यथामूल्य, मूल्यानुसार
11.	ad valorem duty	यथामूल्य शुल्क
12.	coup de etat	बलात्, तख्ता पलट
13.	creme de la creme	उत्तमोत्तम
14.	de facto	वस्तुतः
15.	de jure	विवितः
16.	de novo	नए सिरे से
17.	dies non	अकार्य दिवस, अदिन
18.	en bloc	एक साथ
19.	en clair telegram	शब्दबद्ध तार
20.	en masse	सामूहिक रूप से
21.	en route	मार्ग में
22.	ex gratia	अनुग्रहपूर्वक, अनुग्रही
23.	ex officio	पदेन
24.	ex parte	एक पक्षीय
25.	ex post facto	कार्योत्तर
26.	ex honoris causa	सम्मानार्थ
27.	ex ibidem	वही
28.	in situ	स्वस्थाने

समस्त आर्यावर्त या ठेठ हिंदुस्तान की राष्ट्र तथा शिष्ट भाषा हिंदी या हिंदुस्तानी है। -सर जार्ज ग्रियर्सन।

विदेशी अभिव्यक्तियाँ

क्र	अँग्रेजी	हिंदी
29.	inter alia	अन्य बातों के साथ–साथ
30.	inter se	परस्पर, आपस से
31.	interse seniority	परस्पर परिष्ठता
32.	ipso facto	स्वयमेव
33.	ipso jure	विधितः
34.	locus standi	सुने जाने का अधिकार
35.	modus operandi	कार्य–प्रणाली
36.	pari passu	समान गति से, समरूप
37.	pendente line	वादकालीन
38.	persona non grata	अवांछित व्यक्ति
39.	prima facie	प्रथम दृष्ट्या, प्रथम दृष्टि में
40.	prima facie case	प्रथमदृष्ट्या मामला
41.	prima facie evidence	प्रथमदृष्ट्या साक्ष्य
42.	sine cure	दायित्वहीन
43.	sine die	अनिश्चित काल के लिए
44.	sine qua non	अपरिहार्य शर्त
45.	status quo	यथापूर्व स्थिति
46.	suo moto	स्वप्रेरणा से, अपने आप
47.	ultimo	गतमास का
48.	ultra vires	अधिकारातीत
49.	ut infra	अधोलिखित
50.	ut supra	पूर्वोक्त
51.	versus	विरूद्ध
52.	via	मार्ग से
53.	vice versa	विपरीत क्रम
54.	vis-a-vis	आमने सामने
55.	viva-voce	मौखिक परीक्षा
56.	viz	अर्थात्, नामतः

मुस्लिम शासन में हिंदी फारसी के साथ-साथ चलती रही पर कंपनी सरकार ने एक ओर फारसी पर हाथ साफ किया तो दूसरी ओर हिंदी पर। - चंद्रबली पांडेय।

हिन्दी दिवस

(14 सितंबर)

– प्रफुल अवधे, वित्त विभाग, मुख्यालय नागपुर

प्रेरणा का पर्व हिन्दी दिवस

हर साल '14 सितंबर' को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाने का कारण भारत की संविधान सभा में हिन्दी भाषा को राजभाषा घोषित करना था तब से इस भाषा को राज भाषा का दर्जा प्रदान किया गया था और तब से इस भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाने की शुरूवात की गई। भारत के संविधान सभा में 14 सितंबर, 1949 को भारत गणराज्य की अधिकारिक राजभाषा के रूप में हिन्दी को अपनाया गया था।

हमारे भारत देश में हर साल हिन्दी दिवस 14 सितंबर को मनाया जाता है। हिन्दी भाषा को ऐतिहासिक पलों को याद कर लोग हिंदी दिवस मनाते हैं। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है हिंदी भाषा विश्व की समृद्व और सरल भाषा होने के साथ हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा भी है। हिन्दी भाषा विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। हमारे भारत से पश्चिमी रीति–रिवाजों ज्यादा प्रभावित हुए हैं। हिंदी भाषा हर व्यक्ति सहज और सरलता से बोल सकता है और समझने में भी बहुत आसान है।

हिन्दी दिवस पर हर साल सरकारी कार्यालयों में 14 सितंबर को मनाया जाता है और कई प्रतियोगिता का आयोजन भी करते है जिसमें प्रतियोगिता में सहभाग लेने वाले को उचित इनाम भी दिया जाता है।

स्कूल–कॉलेज में प्रबंधक समिति वाद–विवाद या कहानी बोलने कि प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। संस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं।

भारत की परंपरागत राष्ट्रभाषा हिंदी है। – नलिन विलोचन शर्मा।

इस विशाल देश में अनेक जाति, धर्म के लोग रहते हैं। हमारा देश भाषाओं का मिश्रण है और इसमें कई भाषाओं का समावेश है। इस सभी भाषाओ में हिंदी को देश की राजभाषा का दर्जा दिया गया है। आज हिन्दी भाषा विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। वर्ष 2021 के अनुसार, करोडों में नागरिक हिन्दी भाषा बोलते हैं। हमारे समाज में बहुत से लोग हैं जिन्हें पता नही होता हिंदी दिवस कब मनाया जाता है। मैं आप को बता दूँ देश के सर्वप्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू पहली बार 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाने की शुरूआत करने की घोषण कि थी।

रामचरितमानस एक साहित्यिक कृती है जो हिंदी में भगवान राम की कहानी का वर्णन करती है और गोस्वामी तुलसीदास की सबसे महत्वपूण कृतियों में एक मानी जाती है। हिंदी सबसे वैज्ञानिक भाषाओं में से एक है जो मूल रूप से संस्कृत भाषा के रूप में विकसित होकर हमारी राष्ट्र भाषा बन गई। महात्मा गांधी ने गुजरात शिक्षा सम्मेलन में प्रस्तुत एक भाषण में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, जोर देकर कहा कि हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए और अर्थव्यवस्था, धर्म एंव राजनीति के लिए संचार के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

यह हमारी हिंदी भाषा की गाथा है।

निबंध प्रतियोगिता

हिन्दी दिवस

रिता सुजय भुरे, चिखला खान

देश में हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। 14 सितंबर, 1949 को हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला था। यह हमारे देश की संस्कृति और संस्कार का प्रतिबिंब है। यह देश की एकता का प्रतीक है।

"जन जन को जो मिलाती है,
वे भाषा हिंदी कहलाती है।।"

हिंदी दिवस पर हर साल, भारत के राष्ट्रपति दिल्ली में आयोजित होने वाले समारोह में, हिंदी के लिए अतुलनीय योगदान देने वाले लोगों को राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित करते हैं।

आज के समय में युवाओं को अपनी इस भाषा को बोलने में झिझक नहीं होनी चाहिए।

हिंदी हमारी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा सब है। और हमें इसका आदर और मुल्य समझना चाहिए। अपनी राष्ट्रभाषा को आदर होना चाहिए। यह हमारा गौरव है।

केंद्रीय इस्पात मंत्री ने किया भरवेली खदान का दौरा

मायल श्रमिकों के लिए वेतन समझौते की घोषणा

बालाघाट ■ राज न्यूज नेटवर्क

मैंगनीज और इंडिया लिमिटेड मॉयल द्वारा 31 अक्टूबर को नागपुर में एक भव्य समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में नितिन गडकरी, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री और राम चंद्र प्रसाद सिंह, इस्पात मंत्री, भारत सरकार द्वारा मॉयल श्रमिकों के लिये वेतन समझौता की बड़ी उद्घोषणा की गई।

यह वेतन संशोधन 10 साल की अवधि 01 अगस्त 2017 से 31 जुलाई 2027 तक है, जिससे लगभग 5,800 कंपनी कर्मचारी लाभान्वित होंगे। यह प्रबंधन और मॉयल के मान्यता प्राप्त संघ यानी मॉयल कामगार संगठन के बीच हुए एक समझौता ज्ञापन पर आधारित है। प्रस्ताव में 20% का फिटमेंट लाभ और 20% की दर से अनुलाभ/भत्ते शामिल है। इस खबर से सभी कर्मचारियों में खुशी की लहर छा गई। इसके अलावा केन्द्रीय इस्पात मंत्री, ने सभी कर्मचारियों के लिए वर्ष 2020-21 के लिए 28 हजार रुपये का बोनस भुगतान दीपावली के पहले करने की घोषणा की, जिससे सभी कर्मचारियों की खुशी दोगुनी हो गई। इस्पात मंत्री ने मॉयल भवन का भी भ्रमण किया और कर्मचारियों के साथ बात चीत की।

01 नवंबर को केन्द्रीय इस्पात मंत्री रामचन्द्र पसाद सिंह ने बालाघाट पहुंचकर फेरो प्लांट, बेनीफिशिएसन प्लांट, हाई स्पीड शाफ्ट सिंकिंग परियोजना इत्यादि स्थान का दौरा किया। वे भूमिगत खदान के अंदर भी गये और वहां पर कार्य करने की प्रणाली का विस्तृत ब्योरा लिया। भूमिगत खदान में कार्य कर रहे कर्मचारियों की सुरक्षा व स्वास्थ्य के बारे में उन्होंने काफी बातचीत की।

इस अवसर पर इस्पात मंत्री ने मॉयल के कार्य निष्पादन की सराहना की और अधिक उत्पादन लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रोत्साहित भी किया। उन्होंने ये भी कहा कि कोविड 19 जैसी प्रतिकूल स्थिति में भी मॉयल के कर्मचारियों ने एक जुट हो कर %यादा से %यादा उत्पादन देने की पूरी चेष्टा की है, जो सराहनीय है। इस्पात मंत्रालय से सुकृति लिखी अतरिक्त सचिव एवं वित्त सलाहकार, रुचिका गोविल, अतरिक्त सचिव एवं टी श्रीनिवास, संयुक्त सचिव कार्यक्रम के दौरान शामिल थे। मॉयल के अध्यक्ष सह प्रबन्धक निदेशक मुकुन्द पी चौधरी, निदेशक वित्त राकेश तुमाने, निदेशक मानव संसाधन श्रीमति उषा सिंह एवं निदेशक वाणि%य पी वी वी पटनायक, मॉयल के विभिन्न विभागों के अधिकारी के साथ श्रमिक संघ भी टीम के साथ शामिल थे। कुछ बातें मॉयल के बारे में मॉयल लिमिटेड भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत एक अनुसूची-ए में शामिलश्रेणी-I की एक मिनी रत्न सीपीएसई है। मॉयल देश में मैंगनीज अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक है और महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश रा%य में ग्यारह खदानों का संचालन करता है। मॉयल के पास देश के 34% मैंगनीज अयस्क का भंडार है और यह घरेलू उत्पाद में 45% योगदान दे रहा है। कंपनी का वित्त वर्ष 2024-25 तक अपने उत्पादन को लगभग दोगुना करके 25 लाख मीट्रिक टन करने की महत्वाकांक्षी योजना है। मॉयल कारोबार के अवसर खोजने के लिये गुजरात के साथ साथ मध्य प्रदेश, राजस्थान और ओडिशा रा%य में भी कदम रखने के लिये प्रयत्नशील है।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

कोई समारोह या सम्मेलन किसी उद्देश्य की प्राप्ति के मार्ग को ऊर्जस्वी बना देता है। इससे संचारित होने वाला उत्साह व्यक्ति के अभीष्ट को आकर्षक बना देता है। इसी मूल भावना के साथ देश का पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन वाराणसी में आयोजित किया गया। माननीय गृहमंत्री जी प्रेरणा से आयोजित इस कार्यक्रम में देश के कोने–कोने से राजभाषा अधिकारी, प्रभारी एवं हिंदीकार्मिकों ने भाग लिया।

मॉयल लिमिटेड का मुख्यालय नागपुर में स्थित है और नागपुर का यह गौरव रहा है कि 10 जनवरी, 1975 को प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन यहीं पर किया गया था जिसकी परंपरा अभी तक बदस्तूर जारी है। वर्श 2021 तक कुल 11 विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित हो चुके हैं। प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के आयोजन जैसे महत्वपूर्ण अवसर पर, मॉयल द्वारा अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज करायी गयी।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के संयोजन में दिनाँक 13–14 नवंबर, 2021 को वाराणसी में दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया, सम्मेलन के मुख्य अतिथि माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह रहे, संगोष्ठी के दौरान मॉयल लिमिटेड द्वारा स्टाल लगाया गया।

मॉयल लिमिटेड की प्रदर्शनी : मॉयल द्वारा लगाए गए स्टाल में, कंपनी के कामकाज संबंधित चित्रों का प्रदर्शन किया गया जिसमें विभिन्न खदानों एवं उनकी कार्य प्रकृति से संबंधित पोस्टरों की प्रदर्शनी लगायी

मॉयल के उत्पादों का प्रदर्शन : मुख्य रूप से खनिजों के खनन से संबंधित होने के कारण, मॉयल लिमिटेड के स्टॉल पर मैगनीज धातु के

भारतीय एकता के लक्ष्य का साधन हिंदी भाषा का प्रचार है। – टी. माधवराव।

इस्पात मंत्रालय उप निदेशक राजभाषा स्टाल का निरीक्षण करती हुई

अलग–अलग अयस्कों को आम जनता एवं अतिथियों के दर्शनार्थ रखी गई थी। मैगनीज के विभिन्न स्वरूपों को देखकर आगंतुकों ने कौतूहल व्यक्त किया।

मॉयल के साहित्य एवं गृह पत्रिका का प्रदर्शन : अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन की गरिमा को देखते हुए, कंपनी के स्टॉल पर द्विभाषी साहित्य का प्रदर्शन किया गया। इसके अतिरिक्त कंपनी की हिंदी गृह पत्रिका मॉयल भारती के विभिन्न अंकों को भी प्रदर्शन के लिए रखा गया। आगंतुकों ने पत्रिका की सामग्री को सराहा। उन्हें पत्रिका के ऑनलाइन उपलब्ध होने की भी जानकारी दी गयी। मॉयल भारती के डिजीटल अंक को पढ़ने के लिए राजभाषा विभाग की वेबसाइट अथवा मॉयल लिमिटेड की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर लाभ उठाया जा सकता है।

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार की ट्रॉफी का प्रदर्शन : इस अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में मॉयल लिमिटेड की पत्रिका मॉयल भारती के 5वें अंक को वर्ष 2020–21 के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) प्राप्त हुआं पत्रिका के 5वें अंक को प्रदर्शनार्थ रखा गया, साथ ही राजभाषा कीर्ति पुरस्कार की ट्रॉफी भी आमजन के दर्शनार्थ रखी गई। यह एक गौरवपूर्ण अवसर रहा की प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर मॉयल लिमिटेड ने पुरस्कार जीतते हुए अपनी ऐतिहासिक उपस्थिति दर्ज कराई।

आगंतुकजन एवं प्रतिक्रिया : कंपनी के स्टॉल पर विभिन्न कार्यालयों के उपनिदेशक(राजभाषा), सहायक निदेशक(राजभाषा), राजभाषा अधिकारी, अनुवादकगण इत्यादि का आगमन हुआ। सभी ने स्टॉल पर प्रदर्शित की गई सामग्री की सराहना की एवं राजभाषा कीर्ति पुरस्कार की प्राप्ति पर संपादक मंडल और अधिकारियों को बधाई दी। इस अवसर पर इस्पात मंत्रालय की उपनिदेशक(राजभाषा) महोदया ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और स्टाल का अवलोकन किया।

हिंदी हिंद की, हिंदियों की भाषा है। – र. रा. दिवाकर।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

ऐतिहासिक त्रिपक्षीय वेतन समझौता

मॉयल लिमिटेड ने कर्मचारियों के हित का सदैव ही ध्यान रखा है फिर चाहे वह भर्ती, कार्यस्थल पर सुरक्षा की बात हो या वेतन गारंटी हो। इसी क्रम में कार्मिकों के वेतन का पुनर्निर्धारण करने के लिए तीन पक्षों को शामिल करके एक ऐतिहासिक समझौते को तैयार किया गया। दिनांक 16 नवंबर, 2021 को श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में आयोजित एक उच्चस्तरीय समारोह में कर्मचारी हित में एक वृहदस्तरीय विकास कार्यक्रम को हरी झंडी मिली। मॉयल श्रमिकों के वेतन संशोधन हेतु मॉयल–प्रबंधन और मान्यता प्राप्त कर्मचारी संघ के प्रतिनिधियों के बीच भारत सरकार के मुख्य श्रम आयुक्त की उपस्थिति में, एक त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। वास्तव में, यह एक सुखद अवसर रहा विशेशकर इस दृश्टि से कि यह मॉयलकर्मियों के लिए एक बहुत ही फायदेमंद वेतन पुनरीक्षण हस्ताक्षरित हुआ है जो आपके जीवन स्तर में उल्लेखनीय सुधार के लिए अपेक्षित है। इससे मॉयलकर्मियों कंपनी के विकास और समृद्धि के लिए पहले से भी अधिक समर्पित ढंग से कार्य करने के लिए प्रेरित होंगे।

यह वेतन संशोधन 10 साल की अवधि के लिए हैं जो वर्ष 2017 से 2027 तक लागू होने से कंपनी के करीब 6000 कर्मचारियों को लाभान्वित करता है। यह प्रबंधन और मॉयल के मान्यता प्राप्त यूनियन यानी मॉयल कामगार संगठन (एमकेएस) के बीच हुए एक समझौता ज्ञापन(एमओयू) पर आधारित हैं। इस प्रस्ताव में 20% का फिटमेंट लाभ और 20% की ही दर से अनुलाभ/भत्ते शामिल हैं। कंपनी द्वारा मूल वेतन का 12% की दर से एक अंतरिम राहत और डीए दिया गया जो 20 मई, 2019 से लागू किया गया था।

कंपनी एक बार में बकाया राशि का भुगतान करेगी, जिससे लगभग 218 करोड़ रुपये का वित्तीय प्रभाव पड़ेगा जो 01 अगस्त, 2017 से 30 सितंबर, 2021 तक की अवधि के लिए होगा। प्रस्तावित वेतन संशोधन का वित्तीय प्रभाव लगभग रु. 87 करोड़ प्रति वर्ष होगा। इस वेतन वृद्धि के लिए, मॉयल लिमिटेड ने लेखा–खातों में पहले ही पूरा प्रावधान कर दिया है। मॉयल के इतिहास में यह पहली बार है कि बकायों की गणना नवीनतम प्रस्तुत कम्प्यूटर आधारित प्रणाली(एसएपी) के माध्यम से हुआ है। जैसा कि कंपनी की वेतन/मजदूरी गणना की प्रणाली थोड़ा जटिल थी तो सबकुछ, विशेशकर इस उद्देश्य से प्रोग्राम कर लिया गया है। इस समझौता ज्ञापन में यह भी निर्दिष्ट है कि इस पर हस्ताक्षर होने के 60 दिनों के भीतर इसे लागू भी किया जाएगा।

यह संदेह निर्मूल है कि हिंदीवाले उर्दू का नाश चाहते हैं। – राजेन्द्र प्रसाद।

बैठक में गणमान्यजन श्री डीपीएस नेगी, मुख्य श्रमायुक्त(केंद्रीय), श्री एस सी जोशी, अपर मुख्य श्रमायुक्त(केंद्रीय), श्री रेमिस थिरू, उप मुख्य श्रमायुक्त(केंद्रीय), श्री अंकुर दलाल, क्षेत्रीय श्रमायुक्त(केंद्रीय) उपस्थित थे। मॉयल की ओर से श्री मुकुंद पी. चौधरी, सीएमडी, श्री राकेश तुमाने, निदेशक(वित्त), श्रीमती उषा सिंह, निदेशक(मानव संसाधन) श्री पीवीवी पटनायक, निदेशक(वाणिज्य) व प्रभारी निदेशक (उत्पादन एवं नियोजन) सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। मान्यता प्राप्त संघ का प्रतिनिधित्व श्री रामअवतार देवांगन, महासचिव–एमकेएस, श्री मुकुंद जांभुळकर, उपाध्यक्ष–एमकेएस एवं उनके अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

यह समझौता कंपनी और कर्मचारियों के लिए विकास और समृद्धि के एक नए युग का सूत्रपात करता है। यह निश्चित रूप से कर्मचारियों को उच्च उत्पादन और उत्पादकता की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करेगा जिसके परिणामस्वरूप 'आत्मनिर्भर भारत' के लक्ष्य की प्राप्ति होगी और राष्ट्रीय हित एक बेहतर आयात प्रतिस्थापन तैयार हो सकेगा।

पेड़–पौधे और हम

“रिश्ते और पौधे दोनों एक जैसे होते हैं
लगाकर भूल जाओ तो दोनों सूख जाते हैं।”

उपमहाप्रबंधक (रसायन), मुख्यालय, नागपुर

हमारी प्रकृति की सुंदरता पेड़–पौधों पर निर्भर है। वृक्ष हमारे प्रकृति को खूबसूरत बनाता है और वातावरण को शुद्ध रखता है। वृक्ष मनुष्य के सच्चे मित्र है इसके बगैर प्रकृति की कल्पना नही की जा सकती। प्राचीन काल से मनुष्य और जीव–जन्तु, पेड़ –पौधे पर निर्भर हैं। पाषाण युग में आदिमानव कंद–मूल, पेड़–पौधे के पत्ते, फल और डालियॉं खाते थे तब मनुष्य को सभ्यता के बारे में ज्ञान न था, पेड़ों के पत्तों से आदिमानव अपने शरीर को ढँकता था। पेड़ों पर अपना आश्रय ढूँढ लेता था, जंगली जानवरों से बचने के लिए वह पेड़ों पर चढ़ जाता था। मनुष्य के जीवन में पेड़ों का महत्व ‘जल बिन मछली’ जैसा है। पेड़ों से हमें छाया, मीठे फल, औषधि, लकड़ियाँ प्राप्त होती हैं। आज मनुष्य अपने स्वार्थ को पूर्ण करने के लिए बिना सोचे समझे पेड़ों को काट रहा है उसे इस बात का पता नही है कि वह अपना और अपनी प्राकृति का कितना बड़ा नुकसान कर रहा है। पेड़–पौधें प्रकाश संश्लेषण का कार्य करते है जिसे फोटो सिंथेसिस कहा जाता है। हम मनुष्य कार्बन डाईआक्साइड छोड़ते है जो पौधे सोख लेते हैं उसके साथ जल और सूरज की किरणो की आवश्यकता होती है, पौधे प्रकाश सश्लेशण से ऑक्सीजन निर्माण करते हैं, जितने अधिक पेड़–पौधे होगे उतना वातावरण में अक्सीजन की मात्रा होगी। अगर पेड़ –पौधे नहीं रहेंगे तो पृथ्वी में असंतुलन बढ़ जायेगा और पृथ्वी पर कोई प्राणी जीवीत नही रहेगा। पेड़ –पौधे हमारे पर्यावरण को हरा–भरा और खुशहाल रख सकते हैं। आज यह हमारी विडंबना है कि हम वन और पेडों जैसी प्राकृतिक संसाधनो की अहमियत नहीं समझ रहे हैं। अगर हमें अपनी पृथ्वी की रक्षा करनी है तो हमें आवश्य पेड़ लगाने होंगे क्योंकि वो दिन दूर नहीं कि फिर से प्रकृति और पेडों के अभाव में यह पृथ्वी आग का गोला बन जायेंगे। अतएव पर्यावरण की रक्षा करना हम सभी का परम कर्तव्य है। वृक्ष हमारे सच्चे मित्र हैं अपने मित्रों को बचाकर ही सही मायने में हम सभी अपनी प्रकृती और जीवन की रक्षा कर सकते हैं।

हमारी हिंदी भाषा का साहित्य किसी भी दूसरी भारतीय भाषा से किसी अंश से कम नहीं है। – (रायबहादुर) रामरणविजय सिंह।

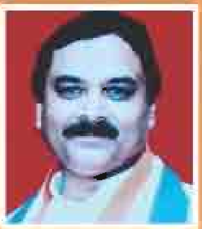

समझो, करो और जीतो

रामअवतार देवांगन, महामंत्री, मॉयल कामगार संगठन, नागपुर

यदि आप सपना देखते हैं, तो उसे पूरा भी कर सकते हैं जैसे :-

- एक आइडिया लो और इसके साथ डटे रहो, कठिन मेहनत करो जब तक की वह पूरा न हो जाये।
- किसी भी काम को शुरूआत करने का सबसे बढ़िया तरीका है कि आप अपनी बात करना बंद कर दें, और अपने काम में पूरा ध्यान लगाकर काम करें।
- हमारे सभी सपने सच हो सकते हैं, अगर हम उन्हें आगे बढ़ाने की हिम्मत रखते हैं।
- सपनों के प्रति उत्सुकता रखने पर ही,आपको बहुत सारी दिलचस्प चीजें करने को मिलती है जो आपके सपने को साकार करने में सहायक होती हैं।
- सपनों को साकार करने के लिए परिवार का साथ होना जरूरी है इसलिए परिवार की कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।
- चिंता क्यों? यदि आप सपने को साकार करना चाहते हैं तो फालतू की चिंता न करें, चिंता उसकी करें जो आपके सपनों को साकार करने में सहायक हो।
- आप किसी चीज पर विश्वास करते हैं तो उस पर सभी तरह से पूरा विश्वास करें, निसंदेह और निर्विवाद रूप से।
- सोचने और समझने और कल्पना करने की कोई उम्र नही होती इसलिए पहले सोचो फिर सपना देखो, तब विश्वास करो और अंत में हिम्मत करो सपने अपने आप साकार होंगे।
- सपनों के साथ जब हम आगे बढ़ते हैं तो नये दरवाजे खुलते हैं, नई चीजें करते हैं क्योंकि हम जिज्ञासु होते हैं और सफल होते हैं।
- सपनों का नतीजा है, नया वेतन समझौता, जिसे देखा और पूरा किया इसलिए यदि आप सपना देखते है, तो उसे पूरा भी कर सकते हैं, जैसे मैने अपने सपने को पूरा किया।
- आप भी अपने सपनों को पूरा कर सकते हैं। बस, विश्वास रखो और आगे बढो।

जलवायु परिवर्तन और टिकाउ विकास

गरीब जिस तरह से जीवन जीता है, उसमे जल जमीन सबके टिकाऊ रहने की बात होती है। टिकाउ विकास के संदर्भ में विश्व स्तर पर जो बहस और बात चल रही है उसके संदर्भ और मायने सबके लिए अलग-अलग है।

गीतु पटले, तिरोडी खान

जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर वर्तमान सरकार द्वारा जो बातें कही जा रही हैं कि पर्यावरण विनाश की जिम्मेदारी विकसित देशों पर अधिक है। बीच में, कि हम उत्सर्जन में 20–25 प्रतिशत की कमी कर देंगे, यह नयी बात छेड़ दी गयी। विकासशील तथा देश में फर्क है और निश्चित ही ज्यादा जिम्मेदारी विकसित देशों की है लेकिन यही बात देश के अंदर लागू की जाए तो यहां भी कुछ लोग विकसित हैं और कुछ लोग विकासशील हैं। हमारे देश का औसत कार्बन फुटप्रिंट दुनिया के अन्य देशों के मुकाबले काफी कम है। भारत में प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन कम है लेकिन देश के ही अंदर जो लोग विकसित है उनकी ऊर्जा, खपत और कार्बन उत्सर्जन में भागीदारी विकसित देशों कें समृद्व लोगों के बराबर ही है। अमीरों के रहन–सहन, चाल–चलन का हिसाब निकालें तो वह दुनिया के अन्य समृद्व लोगों के बराबर हैं। ऐसे में देश के भीतर भी विकसित लोगों को अपनी जिम्मेदारी का एहसास होना चाहिए। सरकार कहती है कि हम उत्सर्जन में कटौती करेंगे तो यह दबाव अमीर पर लगना चाहिए। अगर वे 80 प्रतिशत घटायेंगे तो भी देश का औसत 20 प्रतिशत बैठेगा मध्यम वर्ग और कम आय वर्ग पर अधिक जोर नहीं डालना चाहिए, गरीबों को सचेत करना तो ठीक है जिनके पास एक से अधिक गाडियां ही नहीं बल्कि गाडियाँ का काफिला होता है। गाडियों को रखने की एक सीमा तय होनी चाहिए। इससे ऊर्जा की खपत में कमी आयेगी। कार्बन उत्सर्जन में कटौती और विकसित देशों की अधिक जिम्मेदारी तय करने के बारे में, केंद्रीय पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावडेकर का तर्क बहुत सराहनीय है, भारत लंबे अरसे से यह बात दोहराता आया है। एक तर्क दिया जाता है कि जलवायु परिवर्तन का दुष्प्रभाव कम आय वाले देशों पर अधिक होगा, सच्चाई यह है कि जलवायु परिवर्तन के असर से कोई अछूता नहीं रहेगा। मान लें, अगर समुद्र तल बढ़ जाता है, तो वहाँ टूरिस्ट होटल भी प्रभावित होंगे, जलवायु परिवर्तन से गरीब सबसे ज्यादा प्रभावित होंगे। इसमें सच्चाई नहीं है? यह तर्क विकसित देशों पर कभी अंकुश नहीं लगाते है। अगर पेट्रोल खत्म हो गया, तो सबसे अधिक असर गाडी पर होगा, न कि साइकिल पर चलने वाले पर, मेरा मानना है कि अगर आपको प्रकृति के अनुसार चलना है, तो आपको गरीबों से सीखना चाहिए कि वे कैसे प्रकृति के साथ तालमेल बिठा कर चलते हैं। अगर आप अपनी जीवनशैली और समझ उनके बराबर करेंगें तभी यह पृथ्वी बच पायेगी अन्यथा हम अपने विनाश के लिए आगे बढ़ रहे हैं। हम मानने को तैयार नहीं हैं कि हमें अपनी जिम्मेदारी लेनी है, यही कुतर्क वैश्विक स्तर पर देखा जा रहा है हर कोई दूसरों पर जिम्मेदारी टालने की बात कह रहा है। विकसित देश परमाणु समझौते, शस्त्र समझौतों आदि में भी यही बात बार–बार करते हैं। वे अपनी जिम्मेदारी लेने की वजाय दूसरों से पहले शुरूआत करने की शर्त रखते है। वैश्विक स्तर पर ये उत्सर्जन का औसत पूरे देश का होता है यानि जब

हिंदी भाषा अपनी अनेक धाराओं के साथ प्रशस्त क्षेत्र में प्रखर गति से प्रकाशित हो रही है। – छविनाथ पांडेय।

पूरी आबादी के हिसाब से कोटा निकाला जाता है तो चीन दूसरे और भारत पांचवें स्थान पर आ जाता है। अमेरिका पहले स्थान पर है, इसका मतलब है कि जो जितना बड़ा देश है, उतना कोटा होंगा। यह बिल्कुल उसी तरह हुआ कि एक बस में 40 लोग यात्रा कर रहे है, और दुसरी गाडी में कोई अकेले यात्रा कर रहा है, तो कोटा बस का ज्यादा हो जाता है, लेकिन सवाल है कि कितना पेट्रोल और डीजल जला कर 40 लोग सफर कर रहा है। जब तक प्रति व्यक्ति खपत की बात नहीं की जायेगी तब तक यह बात स्पष्ट नहीं होगीं. जब बात स्पष्ट होगी, तो चीन दूसरे और भारत पांचवें नंबर नही रहेंगी, इस प्रकार 150 देशों में भारत 60वें–62वें स्थान पर पहुँच जायेगा। इसलिए प्रति व्यक्ति की बात जान बूझ कर नही की जाती है।

टिकाऊ विकास की बात बार–बार कही जाती है. इसके दो मायने हो सकते है. पहला कि आप इस तरह से विकास करें कि पृथ्वी टिकी रहे, दूसरा अर्थ होता है जिस तरह से विकास कर रहें हैं। वह टिकाउ है और पृथ्वी उसका बोझ लेती रहे, तो उसका विकास चलेगा। ये दोनों अलग–अलग सोचने के तरीके हैं, अमीर जब टिकाउ विकास की बात करता हैं तो उसका सोचने का तरीका अलग होता हैं, लेकिन जब गरीब कहता हैं कि मैं जिस नज़रिये से देख रहा हूं वह टिकाऊ है, तो वह प्रकृति के बारे में सोचते हुए कह रहा होता है। गरीब जिस तरह से जीवन जीता है, इसमें जल, जंगल, जमीन सबके टिकाऊ रहने की होती है। टिकाऊ विकास के संदर्भ में विश्व स्तर पर जो बहस और बात चल रही है। उसके संदर्भ और मायने सबके लिए अलग–अलग है हर चीज को प्रभावी बनाने की बात करते समय हम यह भूल जाते हैं कि प्रकृति कितना सह सकती हैं?

2 जबलपुर, मंगलवार, 2 नवम्बर 2021 | बालाघाट जिला

कोरोना संकट में भी मॉयल श्रमिकों ने उत्पादन लक्ष्य को प्राप्त किया

केंद्रीय इस्पात मंत्री रामचंद्र प्रसाद सिंह ने किया भरवेली खदान का दौरा, मॉयल श्रमिकों के लिए वेतन समझौते की घोषणा

नवभारत,बालाघाट। मैंगनीज ओर इंडिया लिमिटेड मॉयल द्वारा 31 अक्टूबर, 2021 को नागपुर में एक भव्य समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में श्री नितिन गडकरी, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री और राम चंद प्रसाद सिंह, इस्पात मंत्री, भारत सरकार द्वारा मॉयल श्रमिकों के लिये वेतन समझौता की बड़ी उद्घोषणा की गई ।

यह वेतन संशोधन 10 साल की अवधि 01 अगस्त 2017 से 31 जुलाई 2027 तक है, जिससे लगभग 5,800 कंपनी कर्मचारी लाभान्वित होंगे। यह प्रबंधन और मॉयल के मान्यता प्राप्त संघ यानी मॉयल कामगार संगठन के बीच हुए एक समझौता ज्ञापन पर आधारित है। प्रस्ताव में 20 प्रतिशत का फिटमेंट लाभ और 20 प्रतिशत की दर से अनुलाभ/भत्ते शामिल हैं। इस खबर से सभी कर्मचारियों में खुशी की लहर छा गई। इसके अलावा केन्द्रीय इस्पात मंत्री, ने सभी कर्मचारियों के लिए वर्ष 2020-21 के लिए 28 हजार रुपये का बोनस भुगतान दीपावली के पहले करने की घोषणा की, जिससे सभी कर्मचारियों की खुशी दोगुनी हो गई। इस्पात मंत्री ने मॉयल भवन का भी भ्रमण किया और कर्मचारियों के साथ बात चीत की।

01 नवंबर को केन्द्रीय इस्पात मंत्री श्री रामचन्द्र पसाद सिंह ने बालाघाट पहुंचकर फेरो प्लांट, वेनीफिशिएसन प्लांट, हाई स्पीड शाट सिंकिंग परियोजना इत्यादि स्थान का दौरा किया। वे भूमिगत खदान के अंदर भी गये और वहां पर कार्य करने की प्रणाली का विस्तृत ब्यौरा लिया। भूमिगत खदान में कार्य कर रहे कर्मचारियों की सुरक्षा व स्वास्थ्य के बारे में उन्होंने काफी बातचीत की।

इस अवसर पर इस्पात मंत्री ने मॉयल के कार्य निष्पादन की सराहना की और अधिक उत्पादन लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रोत्साहित भी किया। उन्होंने ये भी कहा कि कोविड 19 जैसी प्रतिकूल स्थिति में भी मॉयल के कर्मचारियों ने एक जुट हो कर ज्यादा से ज्यादा उत्पादन देने की पूरी चेष्टा की है, जो सराहनीय है।

इस्पात मंत्रालय से श्रीमती सुकृति लिखी अतरिक्त सचिव एवं वित्त सलाहकार, श्रीमती रुचिका गोविल, अतरिक्त सचिव एवं टी श्रीनिवास, संयुक्त सचिव कार्यक्रम के दौरान शामिल थे। मॉयल के अध्यक्ष सह प्रबन्धक निदेशक मुकुन्द पी चौधरी, निदेशक वित्त राकेश तुमाने, निदेशक मानव संसाधन श्रीमति उषा सिंह एवं निदेशक वाणिज्य पी वी वी पटनायक, मॉयल के विभिन्न विभागों के अधिकारी के साथ श्रमिक संघ भी टीम के साथ शामिल थे।

कुछ बातें मॉयल के बारे में

मॉयल लिमिटेड भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत एक अनुसूची-ए, में शामिलश्रेणी- वृ की एक मिनी रत्न सीपीएसई है। मॉयल देश में मैंगनीज अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक है और महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश राज्य में ग्यारह खदानों का संचालन करता है। मॉयल के पास देश के 34 प्रतिशत मैंगनीज अयस्क का भंडार है और यह घरेलू उत्पाद में 45 प्रतिशत योगदान दे रहा है। कंपनी का वित्त वर्ष 2024-25 तक अपने उत्पादन को लगभग दोगुना करके 25 लाख मीट्रिक टन करने की महत्वाकांक्षी योजना है। मॉयल कारोबार के अवसर खोजने के लिये गुजरात के साथ साथ मध्य प्रदेश, राजस्थान और ओडिशा राज्य में भी कदम रखने के लिये प्रयत्नशील है।

मॉयल में 4500 करोड़ रुपए के होंगे निवेश

आयुष मंत्री रामकिशोर नानो कावरे ने केंद्रीय इस्पात मंत्री भारत सरकार रामचंद्र प्रसाद के मायल बालाघाट खान भरवेली आगमन पर भेंट कर स्वागत किया तथा मायल वेतन कामगार समझौता सफलतापूर्वक हो जाने पर माननीय मंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया मंत्री श्री कावरे ने इन्वेस्टर मीट के माध्यम से मैंगनीज ओर क्लस्टर की स्थापना एवं 4500 करोड़ रुपए के निवेश की जानकारी भी दी। इस अवसर पर पिछड़ा वर्ग आयोग मध्य प्रदेश अध्यक्ष गौरीशंकर बिसेन एवं भाजपा जिला अध्यक्ष तथा पूर्व विधायक रमेश भटेरे कलेक्टर बालाघाट गिरीश कुमार मिश्रा पुलिस अधीक्षक बालाघाट अभिषेक तिवारी ने भी मंत्री जी का स्वागत किया।

हमारी नागरी दुनिया की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि है। – राहुल सांकृत्यायन।

ऊँची भरो उड़ान

दिखाकर पिंजड़े, नोंचकर पंख,
निशाने पर रखकर नन्हीं-सी जान,
कहते हैं, अब ऊँची भरो उड़ान।

एक मरा, मुआवजा मिला,
जलेगा दूसरा तो खोली मिलेगी।
गूँगों के ग्राहक हैं सब,
बोलतों को तो बस गोली मिलेगी।

खुल जाएंगे सब रास्ते उनके,
देखकर भी जो बंद रखते हैं अपनी जुबान।

हमको मरना ही होगा,
कसूर हमारा-हम इतने भोले हैं
कि जब जब हमको चुप रहना था,
हम तब तब बोले हैं

अपराध यह भी कम नहीं कि हम चलते रहे
हो जानी चाहिए थी जब थकान।

राजेश श्रीवास्तव
उपनिदेशक (राजभाषा)
गृह मंत्रालय, नई दिल्ली

अब है, तो है...

एक तरफ तो ये एकाकीपन,
और उस पर चोट खाया मन,
अब है, तो है।

आप सच के आदी नहीं,
झूठ मुझको पचता नहीं,
ये हिमाकत जिसने भी की
देर तक वो बचता नहीं,

दिल कहे वो बोल देता हूँ,
आप मानें अगर पागलपन,
अब है, तो है।

बात ऐसी कहिए किसी को
कभी वो अखर न जाए,
देख लेना लेकिन ये भी
सच की शख्सियत मर न जाए,

साँप लिपटें तो रहें लिपटे,
मगर मन मेरा है चंदनवन,
अब है, तो है।

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है। - रविशंकर शुक्ल।

अपने पिता के नाम

उम्मीदों की धुंधली धुंधली-सी भोर तक,
हम साथ रहे साँसों के अंतिम छोर तक,
विश्वास सारे पर छले गए,
मेरे पिता, आखिर चले गए!

यमदूत कहीं सिरहाने आकर थे खड़े,
वो बेदम थे फिर भी जान लगाकर लड़े,
धीरे-धीरे सब हौंसले गए,
मेरे पिता, आखिर चले गए!

पहले सीना, फिर गुरदा और जिगर गया,
धीरे-धीरे फिर इन दवाओं का असर गया,
अंग एक-एक कर मल गए,
मेरे पिता, आखिर चले गए!

वो बिछड़े कब थे, जन्मों का ये साथ है,
पहले था अब भी सिर पर उनका हाथ है,
अँगुली थामे चलते चले गए,
मेरे पिता, आखिर चले गए!

राजेश श्रीवास्तव
उपनिदेशक (राजभाषा)
गृह मंत्रालय, नई दिल्ली

कब किसी की पीर समझे

कब किसी की वो पीर समझे
आँसुओं को जो नीर समझे।

अपनी धड़कन अपने स्पंदन में जीते हैं
अपनी पीड़ा अपनी उलझन में जीते हैं
हम समझे तड़प हमारी पहुँच गई उनतक
लोग मगर अपने चंदनवन में जीते हैं
वह भुजबंध ही था हमारा,
आप जिसको जंजीर समझे।

अपनों से जब कोई युद्ध लड़ा जाता है
अपने ही माथे सब दोष मढ़ा जाता है
ये रिश्तों की पुस्तक होती ही है ऐसी
कुछ और लिखा था कुछ और पढ़ा जाता है
बस जरा-सा सच कह दिया था,
चुभ गया तो वो तीर समझे।

उपेंद्र पाण्डेय
कवि
नई दिल्ली

बेटी

उसको क्यूँ अभिशाप समझते?
जो घर स्वर्ग बनाती है!
बेटी तो इक गुड़िया जैसी,
सबके मन को भाती है।

उस पर क्यूँ निर्दयता इतनी फूलों सी जो कोमल है?
क्यूँ सब उसको पाप समझते गंगा सी जो निर्मल है?
भोली–भाली मुख मुद्रा से झलक रही है लाचारी।
क्यूँ है सबको नफरत उससे समझ ना पाती बेचारी?
तिरस्कार सबसे पा करके वो हरदम मुस्काती है।
बेटी तो इक गुड़िया जैसी
सबके मन को भाती है।

क्यूँ बेटी को इस दुनिया में
मिलता सबका प्यार नही?
वंदनीय जो बन सकती है,
क्यूँ उसका सत्कार नही?
कोई उसका दोष बताए,
क्यों बिरादरी जलती है?
जब वह आगे बढ़ना चाहे,
तब लोगों को क्यूँ खलती है?
अवसर उसको देकर देखो,
कैसा नाम कमाती है?
बेटी तो इक गुड़िया जैसी
सबके मन को भाती है।

माँ क्यूँ मुझको रोक रही है?
इस दुनिया में आने से?
कोई मुझको आज बचा ले,
डरती हूँ मर जाने से।
बतलाओ माँ पैदा होकर
तेरा क्या ले जाऊंगी?
तुझसे कुछ भी ले ना सकूंगी,
कुछ ना कुछ दे जाऊंगी।
बेटी की ये करुण वेदना
आँख में आँसू लाती है।
बेटी तो इक गुड़िया जैसी
सबके मन को भाती है।

बेटी होना दोष नही है,
मन से होती है निश्छल।
सब पर वह छाया करती है
ममता का बन कर आँचल।
वह समाज का मेरुदण्ड है,
उससे सारी सृष्टि है।
चलो बदल लें अब हम अपनी
उसके प्रति जो दृष्टि है।
दूर खड़ी है गोद उठा लो,
बेटी हमें बुलाती है।
बेटी तो इक गुड़िया जैसी
सबके मन को भाती है।

हिंदी के ऊपर आघात पहुँचाना हमारे प्राणधर्म पर आघात पहुँचाना है। – जगन्नाथप्रसाद मिश्र।

दिनेश कनोजे 'देहाती'
चार्जहैंड मेकेनिकल, तिरोडी खान

है मंजिल की तलाश तो सफर की शुरुआत कर।
चलता चल बेखौफ, सारा दिन और रात भर।।
रास्ते खुद-ब-खुद, खुल जाते हैं हौसले देखकर,
कामयाबी भी मुँह मोड़ लेगी बैठा जो हार कर।।

हम पत्थर सा जिस्म, फूल सा दिल, रखतें हैं सीने में,
हमारी सेहत का राज है मेहनत से निकले हुए पसीने में ।
अपने लिए तो जीने वालों से भरी है आज की दुनियाँ,
हम मॉयल वालों का यकीन है देश के लिए जीने में।

'पेंसिल की नोंक'

लिखते लिखते
पेंसिल की
नोक का टूटना,
यह नहीं है मात्र घटना।

अपितु
आपकी परीक्षा है,
आपकी लगन,
आपकी प्रतिक्रिया,
आपके प्रयास की,
आपके मनोविज्ञान की।

पेंसिल टूटने के साथ
टूट जाते हैं आप
और आप के इरादे।

या फिर लेकर वादे,
उसे छिल कर
नई नोक बना कर
बढ़ जाते हैं आगे।

पुरस्कृत निबंध

भारत अमृत महोत्सव

हर राह पर बढ़ते कदम

— शमा खोब्रागडे, विपणन विभाग, मुख्यालय नागपुर

हम सब भारतवासी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहें हैं। ब्रिटिश शासन से हमारा देश आजाद हुआ और हम भारतवासी स्वतंत्र हुए। 1947 को हमारा देश आजाद हुआ। 15 अगस्त 1947 को जब हम आजाद हुए तब इसके पीछे कई क्रांतिकारियों का बलिदान था। उनके खून से हम आजाद हुए अर्थात उन्होंने देश के लिए अपना खून बलिदान कर दिया और खुद को देश के लिए न्यौछावर कर दिया

संदर्भ :— आजादी के स्वर्ण महोत्सव से तात्पर्य है कि हमारा देश सोने की चिडिया कहलाता था। लेकिन ब्रिटिश काल में अग्रेजों को ये मान्य नही था वे धीरे—धीरे अपना अधिकार जमाने लगे थे और एक समय आया कि हमारा भारत देश अंग्रेजों का गुलाम हो गया और हम अंग्रेजों के बंदी हो गए लेकिन जब हम आजाद हुए उसके बाद तब पूरी तरह से स्वतंत्र हो गए और फिर एक बार हमारे देश ने आजाद पंछी सा पंख फैलाया।

जहाँ डाल—डाल पर
सोने की चिडिया
करती है बसेरा
वो भारत देश है मेरा।
वो भारत देश है मेरा।।

स्वतंत्रता की दृष्टि से

आजादी के बाद से बहुत सारी महिलाएं क्रांतिकारी आगे आए। जिन्होंने महिलाओं को शिक्षित किया। महिलाओं के अधिकारो को सामने लाने के लिए आगे आयीं। सबसे पहले तो महिलाओं को शिक्षित किया गया। उनके अधिकारों और कर्तव्य के बारे में समझाया गया। उन्हे पर्दाबंदी प्रथा से निकाला गया। बाल—विवाह से उनकी रक्षा की गई। महिलाओं को समान अधिकार दिए गये और उन्हें स्त्री—पुरूष समानता प्रदान किया गया।

समाजिक दृष्टि से :—

समाज में महिलाओं को जो निम्न स्तर का दर्जा प्राप्त हुआ उसे खत्म करने के लिए कई महिला कार्यकारी

हिंदी और नागरी का प्रचार तथा विकास कोई भी रोक नहीं सकता। – गोविन्दवल्लभ पंत।

को काफी संघर्ष करके आगे आना पड़ा महिलाओं के लिए लड़ाई करनी पड़ी ताकि आगे आने वाली महिलाओं को उच्च स्थान प्राप्त हो सके पहले पुरूषों को भी काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था आज वो भी अपना संपन्न जीवन बिता रहीं हैं। स्त्री–पुरूष, बडे बुढ़े सब सामाजिक दृष्टि से उच्च स्थान पर आ गए है। सबको रोजगार और स्वयं रोजगार के बारे में जानकारी दी गई थी सब अपना–अपना कर्तव्य बखूबी निभा रहे हैं।

राजनैतिक दृष्टि से :– जहाँ हम पहले मानसिक कुरीतियों और अंग्रेजो से दबे हुए थे। वहीं आजादी के बाद हम राजनैतिक स्तर पर भी काफी लंबी सफलता प्राप्त कर चुके हैं। पहले अंग्रेजों के शासन काल में, जहाँ सिर्फ अंग्रेजों की चलती थी वहाँ आजादी के बाद हमारे देश के पुरूष तो आगे आए ही है लेकिन महिलाओं ने भी खूब प्रगति की है और बडी धूम–धाम से हम आजादी का स्वर्ण महोत्सव मना रहे हैं।

सांस्कृतिक दृष्टि :– सांस्कृतिक दृष्टि से भी हम काफी समृद्धि रखते हैं। हम हमारे बच्चों को हमारी देश की संस्कृति, उनका संस्कार से अवगत कराते हैं हमारे देश की अनेकता में ही एकता है। इस दिन बच्चों को लेकर हम घूमने निकलते हैं और प्रचीन और पुराने किलों, पुरानी यादें जो हमारी देश की आजादी से संबंधित है वो सब हम बच्चों को बताते हैं। उन्हें आजादी के पर्व के बारे में समझाते हैं और अवगत कराते हैं कि जो हम आजादी का स्वर्ण महोत्सव मना रहे है उनके पीछे कितने क्रांतिकारियों का बलिदान है। चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंग, और भी बहोत सारे क्रांतिकारियों ने देश के लिए बलिदान दिया है। यदि ये लोग आगे नही आते तो हम आज भी गुलामगिरी की जिंदगी जी रहे होते।

खेलकूद की दृष्टि :– हमारा देश आजाद हुआ तब से हम खेलकूद की दृष्टि से भी हमारे देश का नाम रोशन कर रहे है। आज हमारे भारत के लिए ओलंपिक में अपने देश का राष्ट्रगान सुनते हैं। दिल एक दम बाग–बाग हो जाता है हमारे भारतीय खिलाड़ी ओलंपिक में आजादी का स्वर्ण महोत्सव मनाकर वापस आए है। आज हमारे देश का हर दूसरा–तीसरा बच्चा खेलकूद में जाना चाहता है और खेल कूद में इतना आगे आ गया है कि सारी दुनिया को पीछे छोड़कर हमारे देश ने अपना नाम रोशन किया है।

कृषि प्रधान देश :– हम जब आजादी का पर्व मनाते है तो हमें कभी भी ये नही भूलना चाहिए कि हम कृषि प्रधान संस्कृति से हैं और हमारा किसान देश का अन्नदाता है। वो जी–जान लगाता, खेतो में बीज बोता है, फिर वो फसल की कटाई–धुनाई होती है। हमारा देश स्वदेशी उत्पादों में भी आगे है। आजादी के समय तो गांधीजी सिर्फ एक स्वदेशी धोती में रहते थे और हमे भी विदेशों के सामान का बहिष्कार करना चाहिए।

विविधता में एकता :– हमारे देश में विविध प्रकार के संस्कृति, संस्कार त्यौहार मनाया जाता हैं और सब एक दूसरे के त्यौहार में शामिल भी हो जाते है लेकिन जब आजादी का महोत्सव आता है पूरा देश एकत्रित हो जाता है, और बड़ी धुम–धाम से आजादी का महोत्सव मनाया जाता है। सभी जगह अलग–अलग प्रकार की प्रतियोगिता रखी जाती है। सभी इसमें उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं और अति आनंद के साथ यह उत्सव संपन्न किया जाता है।

हिन्दू मुस्लिम, सिक्ख ईसाई।
हम सब है भाई–भाई।।

हमारे देश में किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं किया जाता है यह बड़ी विशेषता है।

तात्पर्य :– आजादी के स्वर्ण महोत्सव से तात्पर्य है कि हमारे देश में विविधता होने के बाद भी एकता कई सारे त्यौहार है जो सब हँसी–खुशी के साथ मनाते हैं लेकिन जब आज़ादी का उत्सव आता है तब सब भारत माता की जय–जयकार लगाते हैं और उनका विशेष अभिनंदन करते हैं जो कि भारत देश की रक्षा के लिए सीमा पर अपनी जान जोखिम में डालकर देश की रक्षा कर रहे हैं।

संस्कृत मां, हिंदी गृहिणी और अंग्रेजी नौकरानी है। – डॉ. फादर कामिल बुल्के।

हिंदी हैं हम !

–श्वेता दिलीप चटप, भूविज्ञान विभाग, मुख्यालय, नागपुर

हम हिंदी दिवस मनाते हैं, बहुत अच्छी बात है ना लेकिन हिंदी दिवस मानने के लिए या हिंदी भाषा लिखने के लिए प्रोत्साहित करना पड रहा हो तो इससे बुरा और क्या? क्योंकि हमारे देश का नाम हिन्दुस्तान है, मतलब कि हिन्दू मतलब हिन्दी लोगो का देश। यहाँ पर 80% लोग हिंदी भाषी हैं और इसका मतलब ये नही है कि हिंदी कठिन है। हमने मतलब, आपने और मैने उसे कठिन बनाया है क्योंकि जब हम बोलते हैं तो सरल बोलते हैं पर लिखते समय बड़े–बड़े शब्दों का प्रयोग करते हैं शायद इसी लिए और दूसरी बात बार–बार अगर कोई काम करो या शब्द दोहराओ तो वे सरल लगते हैं पर शायद कभी–कभी लिखें तो मुश्किल लगती है। मुझे लगता है, कि इसकी सही शुरूआत घर या स्कूल से होनी चाहिए। घर में, जब हम बच्चे को बोलना सिखाते हैं तो one, two, three की बजाए एक दो तीन हिंदी में सिखाया जाए तो शुरूआत सही होगी और अगर स्कूल की बात करें तो सारे विषय अंग्रेजी में नही होते हुए कुछ राष्ट्रभाषा कुछ राज्य भाषा और कुछ अंग्रेजी में हो तो सब बराबर बराबर चलेगा यानी कि इंटरनेशनल स्तर पर भी हम पीछे नही होंगे। क्योंकि अंग्रेजी का ज्ञान है भी होगा। हिंदी को ऊँचा उठाने या उसकी महानता को बरकार रखने में भी हम समर्थ हैं और जो दूसरी भाषा हमारे राज्य में बोली जाती है उसे भी उसका मान मिले तो बात बन जाएगी। आज भी कितने भी पढ़े–लिखे या फिर ऊँचे ओहदे पर होने वाले अगर हमसे हिंदी में बात करें तो अपना सा लगने लगता है यही फर्क है अपनी और पश्चिम भाषा का अंतर। आज भी कई ऐसे लोग हैं जिन्हें अंग्रेजी पढ़ना–लिखना नहीं आता फिर भी हम उन्हें अंग्रेजी सुनाते हैं या फिर उन्हें उपेक्षित कर देते हैं। इसका सबसे सही सबको लागू हो ऐसा उदाहारण है, क्रिकेट कमेंट्री जो आधे लोगों नहीं समझ आती तो भी सुनो, क्यूँ भला, हम हिंदी में कमेंट्री क्यों नही करते। जब की सीरियल, पिक्चर में तो ऐसा नहीं है फिर अन्तर्राष्ट्रीय

भाषा विचार की पोशाक है। – डॉ. जानसन।

स्तर पर ऐसा क्यों ये हमारी गलती है। हम चाहे तो बहुत सारी चीजें बदल सकते हैं जिससे हमारे वातावरण में अलग उत्साह उत्पन होगा और हमें हिंदी लिखना पढ़ना या बोलना कुछ भी कठिन नहीं लगेगा दूसरी बात जिस तरह हमारे यहाँ कोई भी चीज को व्यवहारिक के तौर पर कम और रटा–रटाया या पुस्तकीय ज्ञान ज्यादा महत्वपूर्ण माना जाता है। इस लिए हम कहीं न कहीं बाकी देशों के मुकाबले कम पड़ जाते हैं या फिर कम समझ लेते हैं पर यह सब गलत है और आज जो संस्कृति या हिन्दी में जो आयुर्वेद गणित और विज्ञान है, उसे हम उपयोग में भी लायें न कि बस पढ़े और पश्चिम देशों की कापी न करें। हमें खुद को हिंदी में अपने पूरे देश को नया जन्म देकर उसे पाल–पोसकर बड़ा करना होगा तभी हम विश्व की दौड़ में प्रथम होंगे यह मेरा विश्वास है।

हिन्दी है तो हम हैं
हम हैं तो हिन्दी है।
और अगर हम सब हैं।
तो हमारी पहचान है।
हमारी पहचान देश की शान हैं।

चित्र पर आधारित पुरस्कृत कहानी

मेरा अंश मेरी बेटी

– निलीमा जिभंकर

कल रात मेरे सपने में एक प्रतिमा झलकी, मैं चौंक उठी धीर–धीरे प्रतिमा स्पष्ट रूप में दिखाई देने लगी और मुझसे बात करने लगी पर वह पूरी तरह न दिख पायी। अंधेरे के आड़ में मुझसे बुदबुदाने लगी कहने लगी, ''पहचानती हो, मुझे,'' मैं खामोश सोचने लगी। उसने कहा, ''मैं हूँ, आपकी बेटी।'' जिसकी चाह तो बहुत रखती थी पर जन्म देने पर लोग क्या कहेंगे? कैसे पाल लूंगी बेटी को, कैसे संस्कार दूंगी? उसके गुस्से को कैसे रोक पाऊंगी, इतना सोचती थी आप?

मैं सुनके चौक पड़ी। मेरे यह सब खयाल मेरी बेटी को कैसे पता? मैंने उससे पूछा ''तुम्हें यह सब किसने बताया? वह हँस पड़ी कहने लगी, भूल गयी, एक औरत होकर परेशानी झेलकर, सबसे लड़कर बेटी को जन्म देने का फैसला जिस दिन आपने किया उसी दिन से मै आपका अंश आपकी दृढ़ता, शक्ती सहनशीलता मुझमें पनपने लगी धन्य हूँ मैं जहाँ बेटियों को कोख में ही मार डाला जाता था। वहाँ हिम्मत से पैदा होकर आपकी परछाई कहलाई।

इस देश की गौरवान्वित महिला भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी, प्रथम अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला आप जैसे ही निडर मॉ की बेटियाँ राष्ट्रपति प्रतिभाताई पाटील और ऐसे कई अनगिनत नाम जिस पर भारत गर्व करता है। इतनी निडरता आपसे पाकर मै स्वयं को समाधानी और सार्थक समझने लगी और मरते दम तक उस माँ को कोई आँच न आए इसके लिए प्रयन्तशील रहूँगी। 'जय हिंद' सुन कर आँख खुली, देखा तो बाजु में मेरी प्यारी बेटी सो रही थी। उसकी बलाएँ ले के मुँह से आर्शीवाद निकला। दुनिया की हर बेटी स्वस्थ हो और लंबी उम्र जिए ताकि इस दुनिया में संस्कार कभी कम न पड़े ।

रामचरित मानस हिंदी साहित्य का कोहनूर है। – यशोदानंदन अखौरी।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

– हेमलता साखरे, विपणन विभाग, मुख्यालय नागपुर

भारत देश 15 अगस्त, 1947 को बिटिश शासनकाल से स्वतंत्र हुआ तभी से हम पूरा देश स्वतंत्रता दिवस मनाता है। वर्ष 15 अगस्त, 1947 से 2021 का यह वर्ष 74 वर्ष पूर्ण होकर 75 वें स्वतंत्रता वर्ष पर आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। इसका शुभारंभ माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने गुजरात के साबरमती आश्रम से इसकी शुरूवात की मार्च 2021 से ही अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। जो कि 75 सप्ताह तक मनाया जाएगा। 15 अगस्त 2023 तक स्वतंत्रता दिवस के 78 वर्ष में इसका समापन होगा। इस वर्ष भारत सरकार व राज्य सरकार द्वारा विविध कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। लोगो द्वारा अमृत महोत्सव की उत्सुकता के साथ प्रधानमंत्री द्वारा जाहिर मुहिम का अनुपालन किया गया। पोस्टर प्रतियोगिता, स्टेटस डालना, वॉलपेपर, देशभक्ति दर्शाना, राट्रीय गान विडियों भेजना इत्यादि विविध प्रकार के कार्यक्रम प्रधानमंत्री द्वारा आयोजित किए गए। शुरूआत प्राधनमंत्री द्वारा की गई।

आत्मनिर्भर भारत नये रास्तों पर अग्रसर :– आजादी का अमृत महोत्सव भारत की विशिष्ट उपलब्धि है। यह हमारी जागती ऑखों से देखे गये सपने को करने की इच्छा को जगाती है। युवा पीढ़ी में नया जोश के साथ नये संशोधन व नये विकास कार्य, नई खोज, नई उपलब्धि लोगों के दिलों में जागती है और लोगो में कुछ कर पाने की उत्सुकता भी दिखाई दे रही है और कुछ ना कर पाने की बेचैनी भी दिखाई दे रही है। आजादी का यह अमृत महोत्सव सभी तरफ उजाला फैला है। आज के युवा पीढ़ी को इस आजादी का अमृत महोसव की जानकारी होनी चाहिए इसलिए कि हमारा देश 200 वर्ष तक ब्रिटिश शासन का गुलाम था। किस तरह इस देश को आजादी देने में हमारे वीर क्रांतिकारी लोगो का बलिदान दिया गया जिसे सोचकर भी आखों में पानी भर आता है किस तरह लडाई लड़कर अपने प्राणों को आहुति देकर देश को आजादी दिलाई यह आज के युवापीढ़ी को याद दिलाने के लिए भी यह महोत्सव याद रहेगा।

पूर्ण भारत देश में यह राष्ट्रीय अवकाश के रूप में 15 अगस्त, 1947 से घोषित किया गया है। सभी शासकीय कार्यालय बंद होते है सभी व्यसन उद्योग व दुकाने बंद होती हैं। यह हमारा राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाता है। आजादी का अमृत महोत्सव हमारे देश का गौरवशाली पर्व होता है जिसे स्कुल कार्यालय में विविधि सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा मनाया जाता है। प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी दिल्ली के लाल किले पर प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रध्वज फहराया गया उसके पश्चात संदेश दिया गया। नागरिकों के सतक्ष भारतीय सेना द्वारा परेड किया जाता है। ध्वजारोहण के लिए पूरी सतर्कता के साथ देश की सीमाओं पर स्वदेशी सुरक्षा उपलब्ध कराई जाती है

साहित्य के हर पथ पर हमारा कारवाँ तेजी से बढ़ता जा रहा है। – रामवृक्ष बेनीपुरी।

ताकि देश को कोई क्षति ना पहुँचे। हमारा देश हमेशा संघर्षो से लड़ते आया है। देश पर आई प्रत्येक विपत्ति को आसानी से मार गिराता है। पाकिस्तान और चीन जैसे शत्रु देश को पराजित करने का साहस रखता है। हमारे भारतीय सैनिक ईट का जवाब पत्थर से देते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा विश्व की हर धरती पर हिंदी में भाषण देकर भारत देश की राष्ट्रीय भाषा को गौरवान्वित किया है। पूरे भारत वर्ष का गर्व आजादी का अमृत महोत्सव मनाना हमारे लिए गौरव की बात है। हमारा सबसे ऊँचा राष्ट्रीय उत्सव है जिसे पूरा देश मिलकर मना रहा हमारा देश दिन ब दिन प्रगति की राह पर बढ़ता ही जा रहा है।

पूरे विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा है भारत सरकार द्वारा कोरोना तहामारी पर नियंत्रण किया गया है यह हमारी सबसे बडी उपलब्धि है कि हम भारतीय सभी कठिन से कठिन चुनौतियों का सामाना करते है। हमारा देश उन्नीत की राह पर ऐसा ही बढता रहे। सभी युवा पीढ़ी से निषेदन है कि देश में सभी एकता के साथ रहे। बिना जातिवाद, भेदभाव से दूर रहें, वक्त का सही उपयोग करें, वक्त के पहले या वक्त के साथ वाले जीवन में परिर्वतन लाते रहें। देश में विकास को आगे बढ़ाना है तो अपने आप में परिर्वतन लाएं बदलाव लाएं ताकि हमें स्वतंत्रता पश्चात ये खुशी रहे कि हम आजाद देश के आजाद पंछी हैं जिसकी ऊँचाई नापी नहीं जा सकती। हमें हर क्षेत्र में आगे रहना है, ये आजादी का अमृत महोत्सव हमें याद दिलाता है कि हम गुलामी से कैसे आजाद हुए और ये महोत्सव क्यों मनाया जा रहा है इस की जानकारी हर एक बच्चे, युवापीढ़ी को ज्ञात होना चाहिए।

भारत में यह महोत्सव बड़ी धूमधाम से 75 सप्ताह तक मनाया जाएगा। आप सभी को भारत के आजादी महोत्सव की शुभकामनाएँ।

राष्ट्रवंदन है आजादी का अमृत महोत्सव

पंकज विजय गुप्ता, तिरोडी खान

इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस की 75 वीं वर्षगाठ को भारत सरकार आजादी का अमृत महोत्सव के तौर पर मना रही है। 15 अगस्त, 1947 को भारत ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र हुआ था। आजादी के 75 साल का ये जश्न 12 मार्च, 2021 से शुरू हो चुका है जो 75 सप्ताह तक चलेगा। 15 अगस्त, 2023 78 गणतंत्र दिवस पर अमृत महोत्सव का समापन होगा। इस दौरान भारत सरकार व राज्य सरकारों द्वारा देशवासियों की जन भागीदारी से अलग–अलग आयोजन किए जायेंगे। हजारों–हजारों सूर्यो से अधिक तेजस्वी भारत की स्वतंत्रता को लोक जीवन में स्थापित किए जाने की आवश्यकता को महसूस करते हुए एक और आजादी के जश्न मनाये जाएंगे जिसमें कुछ कर गुजरने की तमन्ना होगी तो आगे तक कुछ न कर पाने की बैचनी भी।

आत्मनिर्भर भारत नये रास्ते पर अग्रसर :– आजादी का अमूत महोत्सव भारत की विरल उपलब्धि है। हमारी खुली आँखों से देखे गये सपनों को आकार देने का विश्वास है तो जिस मूल्यों को सुरक्षित करने एवं नया भारत निर्मित करने की तीव्र तैयारी अब होने लगी है। हमारी स्वतंत्रता चेतना का अहसास जिसे आकर लेते वैश्विक, सामुदायिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं वैसिक अर्थ की सुनहरी धाराएं है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बहुत कुछ बदला मगर चेहरा बदल कर भी दिल नहीं बदला। विदेशी सत्ता की बेड़ियाँ टूटी पर बंदियों के संस्कार नहीं टूटे और उसे अब आकार लेते हुए देखा जा सकता है। जिस संकीर्णता, स्वार्थ राजनीति विसंगतियों, व्यर्थ अपराधों, शोषण, भ्रष्टाचार एवं जटिल सरकारी प्रक्रियाओं में अंतर पैदा कर सभावनाओं एवं आजादी के वास्तविक अर्थों को धुंधला दिया था।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

– भारती रमेश पिल्ले, योजना एंव विविधकरण, मुख्यालय, नागपुर

कहानी

एक गाँव में एक किसान पत्नी और अपनी एक बेटी के साथ रहता था। वह बहुत ही गरीब था। एक दिन उस किसान की पत्नी ने अपने पति से कहा कि हम बडी ही मुश्कील से एक समय का खाना जुटा पाते हैं उस पर से अपनी बेटी भी दिन–ब–दिन बड़ी होती जा रही है, इस गरीब परिस्थीती में हम अपनी बेटी की शादी कैसे कर पायेगे?

तब वह किसान भी बड़ी गहरी सोच में पड़ गया कि सच में हमारे लिए एक समय का खाने की व्यवस्था करना मुश्किल होता है। ऐसे में बेटी की शादी मुश्किल से होगी। यह कैसे संभव हो पायेगा? दोनों पति–पत्नी गहरे विचार में खो गये। बहुत देर विचार करने के बाद दोनों ने अपने दिल पर पत्थर रख कर एक फैसला किया कि कल सुबह बेटी को मार कर गाड़ देंगे। दूसरे दिन सूरज निकलने के बाद में, अपनी बेटी को बहुत अच्छे से नहलाया बार–बार उसका सिर चूमने लगी तब बेटी ने पूछा माँ क्या आप मुझे अपने से दूर कहीं भेज रही हैं? वर्ना आज से पहले आपने मुझे कभी इस तरह प्यार नही किया? माँ ने अपनी बेंटी के इस प्रश्न का कोई उत्तर नही दिया। वह चुपचाप अपनी बेटी को देखती रही उसकी आँखो में आँसू भर आये।

तभी उसका पति वहाँ फावडा और चाकू लेकर आ गया। माँ ने फिर से अपनी बेटी का सिर चूमा और उसे अपनी सीने से लगाकर नम आँखों से उसके पिता के साथ रवाना किया।

दोनों बाप बेटी जंगल के रास्ते पर निकल पड़े दोनों चलते जा रहे थे रास्ते पर चलते–चलते उसके पिता के पैरो पर कॉटा चुभ गया और वह दर्द के मारे चीख कर जमीन पर बैठ गया। बेटी से अपने पिता का दर्द देखा नहीं गया उसने तुरन्त अपने पिता के पैरों से काँटा निकाल और अपनी चुनरी का एक टुकडा फाड़ कर अपने पिता के पैरो में बॉध दिया।

बहुत देर तक चलने के बाद दोनों बाप बेटी जंगल में पहुँच गये। जंगल में पहुँच कर बाप ने अपनी बेटी को एक जगह पर बिठाकर अपना फावड़ा लेकर गडढा खोदने लगा। गर्मी का दिन था वह गडढा खोदते –खोदते थक गया था। वह पसीने से लथफथ हो गया था। उसकी बेटी वहाँ बैठे–बैठे यह सब देख रही थी। उससे अपने पिता की यह हालत देखी नही जा रही थी। वह उठकर अपने पिता के पास गई और बोली ''पिताजी! लाओं मैं आपका पसीना पोछ देती हूँ आप बहुत थक गये हैं।'' थोड़ी देर आराम कर लीजिए यह सुन उसके बाप ने उसे धक्का देते हुए कहा, कि तू दूर जाकर बैठ, मै अभी नही थका हूँ, बेटी चुपचाप जाकर फिर से अपनी जगह पर बैठ गई। कुछ समय बीता उसका बाप गडढा खोदते–खोदते बहुत थक गया था। यह देख बेटी फिर से उसके

पास जाकर बोली, "पिताजी, आप बहुत थक गये हैं। आप थोडा सा आराम कर लीजीए यह फावड़ा मुझे दे दीजिए गड्ढा मैं खोद देती हूँ।

यह सुन बाप का दिल पसीज गया उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। उसने अपनी बेटी को अपनी सीने से लगा लिया और कि बेटी तुझे अपने से कभी अलग नही करूँगा। मैं तो यह गड्ढा तेरे लिए खोद रहा था और फिर भी तू मेरी ही चिंता कर रही थी।

अब मै बहुत महेनत करूँगा, तुझे खूब पढाऊँगा और खूब धूमधाम से तेरी शादी करूँगा तुझे किसी भी चीज की कोई कमी नही होने दूँगा बेटियाँ तो होती ही है माँ–बाप की चिंता करने वाली, घर की लक्ष्मी होती है जिस घर में बेटियों रहती है वह घर खुशीयों से भरा होता है। इसलिए बेटियों का हमेशा आदर करना चाहिये। उन्हें कभी बोझ नही समझना चाहिए।

सरांश :– बेटिया भगवान का वरदान होती है इसलिए कहा जाता है कि बेटा तो भाग्य से मिलता है बेटियाँ सौभाग्य से मिलती है ।

पुरस्कृत निबंध

"सृष्टि हमें चलानी है तो कन्या संतान बचानी है।"

मंगलु, गुमगॉव

माँ चाहिए, बहिन चाहिए, पत्नी चाहिए फिर बेटी क्यों नहीं चाहिए। दिए गये चित्र से यह संदेश मिल रहा है कि हमें बेटी को बचाना चाहिए हमारे भारत में हर बार लडकीयों की भुण्र हत्या की जाती है। बेटी बचाव बेटी पढ़ाओं एक ऐसी योजना है जिसमें कन्या शिशु को पढ़ाना और शिक्षित करना है। इस योजना में भारत सरकार के द्वारा 22 जनवरी 2015 को कन्या शिशु के लिए जागरूकता का निमार्ण करने और महिला कल्याण में सुधार करने के लिए शुरू किया गया था।

जैसे कोई भी गाडी एक पहिए से नही चल सकती ऐसे ही जीवन रूपी गाडी भी केवल पुरूषों से नही चल सकती है। जीवन चक्र में स्त्री और पुरूष दोनो की सामान सहभागीता है। बेटियों की घटती संख्या के लिए लिए चिंता का विषय है। चूंकि यह आज का बडा ज्वलंत विषय है इसलिए इस मुददे पर बातचित की जाती है। हमारा देश कृषिप्रधान देश और पुरूष प्रधान देश है यहा संदियों से ही स्त्रीयों के साथ दुरव्यवहार होता आ रहा है।

इस पुरूष प्रधान देश में हमेशा से ही पुत्र की कामना करते है। इसी पागलपन में ना जाने कितनी लडकीयों का जीवन बरबाद कर दिया है। लडकियों के साथ शोषण होने के पिछे मुख्य कारण अशिक्षा भी है अगर लडकिया पढ लिखकर सक्षम बनती है तो उन्हे सही गलत का ज्ञान भी होता है। जब बेटियॉं अपने पैरो पर खडी होगी तो उन्हे कोई बोझ नही सकझेगा।

इसलिए सरकार ने बेटी बचाओं और बेटी पढाओं के मध्यम से ज्यादा से ज्यादा शिक्षित बनाया है। ऐसा कोई काम नही है जो लडकियों नही कर सकती है। इंदिरा गांधी से लेकर कल्पणा चावला ऐसे लाखों नाम है जिन्होने देश का नाम रौशन किया है।

लडकियाँ हर क्षेत्र में आज आगे है क्रिकेट उदा पी व्ही सिंधु बबीता फोगाट अंत में यही लिखना चाहुगी की असइए कन्या के जन्म का उत्सव मनायए हमें अपनी बेटियों पर बेटों की तरह गर्व होना चाहिए और अपनी बेटी के जन्म पर पॉच पेड जरूर लगाए क्यों की यह पृथ्वी माता भी एक माता है जो हम सबका पोषण भरण कर रही है। इसलिए हम सब की जिम्मेदारी है कि पेड़ लगाकर इसलिए माता कर संतुलन बनाये रखे।

पुरस्कृत निबंध

आजादी का अमृत महोत्सव

नरेश गायधने, डोंगरी बुजुर्ग खान

आज भारत को आज़ाद हुए 75 साल पूरे हुए हैं इसे देखते हुऐ भारत सरकार ने पूरे देश में आजादी का अमृत महोत्सव मनाने का कार्यक्रम रखा है। जिसे पूरे भारत में सरकारी कार्यालय, स्कूल, दवाखाना में जोश के साथ मनाया जा रहा है। आजादी का अमृत महोत्सव मनाने का मुख्य उद्देश्य भारत के लोगों में राष्ट्रवाद की भावना जगाना, बच्चों में देशसेवा का भाव जगाना है। भारत को आजाद कराने के लिए हमारे नेताओं ने जो बलिदान दिया है उसे बच्चों को बताना है।

आजादी का महोत्सव 12 मार्च, 2021 को शुरू होकर 15 अगस्त, 2023 को संपन्न होगा। इस दौरान भारत सरकार का राज्य सरकारों द्वारा देशावासियों की जनभागीदारी से अलग–अलग आयोजन किये जायेंगे। आजादी का अमृत महोत्सव भारत की उपलब्धि है। भारत के लोगों का सपना नया भारत निर्माण करने की तैयारी है। भारत ने गुलामी की बेडियाँ तोड़कर अपने संस्कार और आदर्श को नया आकार दिया है। तमाम अवरोधों को पार करते हुए आत्मनिर्भर भारत और नया भारत निर्माण करने की ओर अग्रसर है।

इस आजादी के अमृत महोत्सव में हम सब भारतवासी एक कसम खाते है कि नयी की इबारत लिखते हुये भारत को शिक्षित कर आधुनिक बनायेंगे। भारत को हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए संकल्प लेते हैं। कोशिश करते है, कि भारत भर में कोई भी आदमी भूखा न रहे गांव में बिजली और पानी की बुनियादी सुविधाये पहुँचाई जाएं। आज भारत अपने आजादी के अमृत महोत्सव के साथ में पूरी दुनिया में एक ताकतवर देशों में माना जाने लगा है इसका श्रेय हमारे वैज्ञानिक, हमारी सेना और भारत की जनता को जाता है। आज भारत की अमृत महोत्सव के साल में भारत अपनी जरूरत पूरी करके निर्यात के क्षेत्र में लगातार बढोत्तरी कर रहा है। कोरोना काल में भारत ने आत्मनिर्भर होना सीख लिया है। भारत के 60 प्रतिशत लोगों को करोना का टीका लग चुका है और अपनी जरूरत पूरी करके दूसरे देशों को उसका निर्यात किया जा रहा है। पूरे विश्व में सबसे ज्यादा टीका भारत में ही लगा है जो एक विश्व कीर्तिमान है। आज भारत अपने अमृत महोत्सव के साथ में शिक्षा और रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो आजादी के अमृत महोत्सव के साल में भारत को कुछ चुनौतियों से भी निपटना है। आज भारत में धार्मिक कट्टरतावाद और जातीय भेदभाव बढ़ता जा रहा है। हमारे नेता अपने वोट के राजनीतिक फायदे के लिए लोगों को धर्म और जाति में बाँटने का कार्य कर रहे है जो कि आने वाले दिनों में घातक साबित हो सकता है इसका सीधा फायदा देशविरोधी ताकतें उठा सकती हैं और देश में आंतकवाद और नक्सलवाद को बढ़ावा मिल सकता है। इससे बचना आवश्यक है। देश में राष्ट्रवाद हो, राष्ट्रवाद को बढावा देने के लिए बच्चों के प्राथमिक शिक्षण में राष्ट्रवाद को शमिल करना राष्ट्रवाद से संबंधित पाठ्य और कार्यक्रम में बच्चों का सहभाग करवाना आवश्यक है। चलो, आज भारत के अमृत महोत्सव को बड़े धूमधाम से मनाते हुए सभी भारतवासी शपथ लेते हैं कि भारत को विश्व गुरू बनाने में अपना–अपना श्रेष्ठ योगदान देते हैं।

जय हिन्दी जय भारत

सभ्य संसार के सारे विषय हमारे साहित्य में आ जाने की ओर हमारी सतत् चेष्टा रहनी चाहिए। – श्रीधर पाठक।

इक्कीसवीं सदी तो बेटियाँ उन्नीस क्यों रहें?

संयुक्ता दास, मैनेजमेंट ट्रेनी (कार्मिक), मनसर

21वीं सदी में प्रवेश किये भी हमे वर्षों बीत गए हैं फिर भी मेरे दिल में ये सवाल बार–बार आकर ठहर जाता है कि आखिर क्यों हमारे इस समाज में आज भी बेटियां सुरक्षित नहीं हैं? आज हम जब कभी भी अपने इस प्रगतिशील समाज का मूल्यांकन करने बैठते हैं तो हमारी बेटियों के साथ हो रहे अत्याचार इसकी गतिशीलता और संवेदनशीलता दोनों पर सवालिया निशान खड़ा कर देते हैं। यही नहीं हमारे देश के प्रत्येक हिस्से से हमें हर रोज हमारी बच्चियों के साथ घटित होने वाली अप्रिय घटनाओं की जानकारी मीडिया व समाचार पत्रों के माध्यम से प्राप्त होती रहती है। तो हम ये सोचने पर विवश हो जाते हैं कि आखिर क्यों सृष्टि में ईश्वर द्वारा रचित इस अनमोल कृति को मानव रचित समाज में प्रवेश करने पर इतना सहना पड़ता है? क्यों हम बेटियों को इस संसार में प्रविष्टि पाने से पहले ही उनका मार्ग रोक देते हैं? और जो प्रविष्टि पा लेती हैं उनका जीवन भी किसी न किसी तरह दूभर करने में कोई कसर नहीं छोड़ते।

क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हम सब मिलकर इस धरा पर इन बेटियों के लिए ऐसा परिवेश निर्मित कर दें कि हर बेटी लक्ष्मीबाई, सुनीता विलियम्स, कल्पना चावला की परंपरा का निर्वाहक बनें न कि अपने नयनो से बहते अश्रुओं को संभालने वाली वेदना का...

क्यों बेटियां सुरक्षित नहीं हैं हमारे समाज में?
दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती की रूप हैं बेटियां।
बेटियां ही मान हैं, तो अभिमान भी है बेटियां।
बेटियों से है धरा, तो बोझ क्यों हैं बेटियां
हमारे इस समाज में, अभिशाप क्यों हैं बेटियां
बेटियों ने जब संभाली है, सुरक्षा देश की
तो हमारे इस समाज में, क्यों असुरक्षित है बेटियां ...।

पुरस्कृत कहानी

लडकी अबला नहीं

प्रतिमा मिश्रा, डोंगरी बुजुर्ग खान

निशा और अनूप दोनों की शादी को दो वर्ष होने के बाद आज निशा ने अनूप को खुशखबरी दी कि वो माँ बनने वाली है। अनूप को तो खुशी का ठिकाना नहीं था। उसने सपने बुनने शुरू ही किये थे कि माँ की आवाज कानों में गुजने लगी बहु मुझे तो पोता ही चाहिए पोता लेकर ही घर में आना। निशा माँ की आवाज सुनकर पलंग पर बैठ गयी क्योंकि माँ का आदेश अनूप के लिए पत्थर की लकीर जैसा था वो कभी अपनी माँ की आँखों में आँसू नहीं देख सकता था। यदि माँ के कहे अनुसार नहीं होगा तो...?

जैसे–तैसे तीन माह बीते। माँ रोज भगवान को कहती भगवान मुझे पोता ही चाहिए। आखिर वह दिन आ गया जब निशा को सोनोग्राफी के लिए डॉक्टर के पास जाना था। माँ ने निशा को कहा, ''बहु, मैं भी साथ चलूँगी।'' निशा अनूप माँ को मना तो कर नही सकते थे। तिनों डॉक्टर के पास गये। माँ ने डॉक्टर से कहाँ मैडम चाहे कितने भी पैसे लगे चलेगा पर मुझे तो पोता ही चाहिए। डॉक्टर ने माँ को समझाया पर वो कहाँ मानने वाली। सोनोग्राफी हुई पर वही हुआ जिसका निशा को डर था। डॉक्टर ने कहा माँ जी आपके घर पोती आने वाली है माँ ने का डॉक्टर साहब ये कैसे होगा मैं आने दूंगी तभी ना आप जल्दी से जल्दी बच्चा गिरा दो आपको मुँह मांगे पैसे दूंगी। अभी नही तो अगली बार भगवान मुझे पोता देगे ही। निशा को अंदर ले गई। निशा ने डॉक्टर से कहा मैडम मै आपके पैर पड़ती हूँ मेरी बच्ची को आने दो इस दुनिया में आप भी तो लडकी ही हो ना। आपकी माँ ने भी ऐसा सोचा होता तो क्या इस दुनिया में आती। निशा ने डॉक्टर को झकझोर दिया। मैं मेरी सास की सारी जली–कटी सुन लूंगी। उनकी मार भी खा लूंगी अपनी बच्ची को मै जन्म दूंगी। आप मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिए डॉक्टर ने निशा की सासु माँ से झूठ कहाँ कि मैने दवाई दे दी हैं। निशा और उसकी सास घर आ गए। पर रात जैसे–तैसे अनूप को नींद आयी। उसके कानों में आवाज आयी, पापा! मुझे इस दुनिया में आने दो, पापा! मुझे भगवान ने लड़की बनाया तो मेरी क्या गलती है? पापा! मुझे दुनिया देखनी है, पापा! प्लीज...! पापा! आपका सिर झुकने नहीं दूँगी। पापा! मुझे दुनिया देखनी है, मुझे आने दो पापा।''

नींद से जागा, उसे लगा कोई उसको पकड़कर उससे कुछ कह रहा है। उसने सोचा, आज नहीं तो कल माँ को बताना ही है। फिर कल क्यों, आज ही क्यों नहीं। वह माँ के पास गया। माँ भगवान की पूजा में ही थी। अनूप ने कहा, ''माँ! आप किसकी पूजा कर रही हैं?'' माँ ने कहा, ''बेटा! आज मैं संतोषी माँ की पूजा कर रही हूँ।'' अनूप ने कहा,

हिंदी भाषा और साहित्य ने तो जन्म से ही अपने पैरों पर खड़ा होना सीखा है। – धीरेन्द्र वर्मा।

''माँ! संतोषी माता तो एक लड़की ही हैं।'' माँ आप भी लड़की ही हो फिर आपको लड़की से नफरत, लड़कों से प्यार क्यों? माँ ने कहा, ''बेटा, जमाना बहुत खराब हैं, देख नहीं रहे हो, लड़कियों पर अत्याचार, बलात्कार होती है। तू कहाँ–कहाँ देखेगा? लड़की होगी तो तेरी जिम्मेदारी दुगनी–चौगनी हो जायेगी। तेरा सिर कभी भी झुक सकता है इसलिए मैं लड़की के खिलाफ हूँ। अनूप ने माँ का हाथ अपने हाथ लिए रहा, तभी निशा भी वहाँ आ गयी। अनूप ने कहा, ''माँ जमाना बदल गया है, आज की लड़की अबला नहीं है। आज हर क्षेत्र में अपना नाम रोशन किया है। हमारी भी बेटी हमारा नाम रोशन करेगी। माँ, लड़का–लड़की एक समान हैं। मैं आपको एक कविता सुनाता हूँ –

लड़के की तरह लड़की भी मुट्ठी बांधकर पैदा होती है, लड़के के तरह लड़की माँ की गोद में हँसती–रोती हैं। करते शैतानी दोनों एक जैसी, करते मनमानी दोनों एक जैसी, दादा की छड़ी, दादी का चश्मा, दुल्हन के जैसे माँ का आँचल ओढ़ते हैं। भूख लगे तो रोते हैं, लोरी सुनकर सोते हैं। आती हैं, दोनों को जवानी, बनाती है दोनों की कहानी, दोनों कदम मिलाकर चले, दोनों दीपक बनकर जले, लड़के की तरह भी लड़की भी नाम रोशन करती हैं।

माँ के आँखों में आँसू आ गये। माँ ने कहा, ''बेटा मैं गलत थी। मेरी गलती है। मुझे बात समझ में आ गई है। मुझे माफ कर दो।'' बहु निशा ने माँ के हाथों को चूम लिया। माँ ने दोनों को गले लगा लिया। माँ ने कहा, ''आने वाले मेहमान का हमारे घर में स्वागत हैं, वो चाहे लड़की हो या लड़का।'' सभी हँसने लगे।

''बेटी बचाओ''

– अशोक अडभैया, मनसर खान

भारतीय समाज में लड़कियों की स्थिति पर कई वर्षो से बहुत बहस हुई है। लड़कियों को आमतौर पर खाना पकाने और गुड़िया के साथ खेलने में शामिल माना जाता है जबकि लड़कों को शिक्षा ओर अन्य शारीरिक गतिविधियों में शामिल किया जाता है। पुरूषों की ऐसी पुरानी धारणाओं ने उन्हें महिलाओं के खिलाफ हिंसा के लिए प्रेरित किया है जिसके परिणामस्वरूप समाज में बालिकाओं की संख्या में लगातार कमी आई है।

इसलिए देश के विकास को सुनिश्चित करने के लिए दोनों के अनुपात को बराबर करने के लिए बालिकाओं को बचाने की बड़ी आवश्यकता है। भारतीय समाज में लड़की की स्थिति लड़के बच्चे के लिए माता पिता की अत्यधिक इच्छा के कारण बिगड़ी है। इसने समाज में लैंगिक असमानता पैदा की है और लैंगिक समानता लाकर इसे दूर करना बहुत आवश्यक है। समाज में अत्यधिक गरीबी ने महिलाओं के खिलाफ दहेज प्रथा के रूप में समाजिक बुराई पैदा की है जो महिलाओं की स्थिति को खराब करती है आम तौर पर माता–पिता सोचते हैं कि लड़कियाँ केवल पैसे खर्च करने के लिए होती है इसलिए वे जन्म से पहले या बाद में कई तरीकों से कन्या भ्रूण हत्या करते हैं।

बालिकाओं को बचाने के लिए ऐसे मुद्दों को तत्काल हटाने की आवश्यकता है। निरक्षरता एक और मुद्दा है जिसें दोनों लिंगों के लिए उचित शिक्षा प्रणाली के माध्यम से हटाया जा सकता है। बालिकाओं को बचाने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना सबसे प्रभावी उपकरण है। बालिकाओं को बचाने के बारे में कुछ प्रभावी अभियान के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जाना चाहिए। एक बालिका माँ के गर्भ के अंदर और बाहर असुरक्षित है। वह उन सभी पुरूषों के साथ जीवन के दौरान कई तरह से डरती है जिन्हें वह जन्म देती है। वह उन पुरूषों के द्वारा शासित है जिन्हें वह जन्म देती है। वह उन पुरूषों के लिए शर्म की बात है।

बालिकाओं को बचाने और सम्मान देने की क्रांति के लिए शिक्षा सबसे अच्छा साधन है। एक बालिका को हर क्षेत्र में सम्मान मिले और अवसर दिया जाना चाहिए। सार्वजनिक स्थान पर लड़कियों की सुरक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। बालिका अभियान को सफल बनाने के लिए बालिकाओं के परिवार के सदस्यों को बेहतर सहयोगी बनाया जा सकता है और मेरा ऐसा भी मानना है कि अगर लड़कियों के माता–पिता ने शादी के लिए पैसे बचाने से ज्यादा उनकी पढ़ाई पर खर्च किया तो एक बार फिर यह भारत सोने की चिड़िया कहलायेगा। अतः मैं बस इतना बोलना चाहता हूँ कि कोई भी बेटी यह नहीं चाहेगी कि उनके माता–पिता उन्हें मात्र एक वस्तु समझें।

बेटी का विवाह

(पुरस्कृत रचना)

श्री अफरोज अख्तर, कार्मिक विभाग, मुख्यालय नागपुर

पहाड़ी किनारे एक गाँव था। उस गाँव में डोलिया काका अपने परिवार के साथ निवास करते थे। काका के परिवार में काका के अलावा उनकी धर्मपत्नी एवं चार बेटियाँ रहती थी। काका गाँव में स्थित पंचायत भवन में माली का कार्य करते थे एवं उनकी कुछ बीघा जमीन भी थी। वह माली का काम करके इतने पैसे नहीं जुटा पाते थे कि उन पैसों से उनके परिवार का भरण–पोषण हो सके। वह माली का कार्य पूर्ण कर बिना किसी आराम के अपने खेतों की ओर रोजाना कार्य करने चले जाया करते थे। उनके घर का खर्चा दोनों कार्यो को पूर्ण करके चलता था। अकसर गाँव के लोग अपना कार्य पूर्ण कर चौपाल लगाकार शाम को बैठा करते थे लेकिन काका को अपनी चार–चार बेटियों की अक्सर चिन्ता हुआ करती थी। बड़ी बेटी अब विवाह के लायक हो चुकी थी और अपने घर के खर्चो में से कुछ पैसे बचाकर काकी ने कुछ गहने एवं सामान अपनी बड़ी बेटी के विवाह सम्पन्न करवाने के लिए रखी थी। कुछ माह पश्चात् बड़ी बेटी का विवाह संपन्न हो गया एवं उसके कुछ माह पश्चात् काकी का देहांत हो गया। इन्हीं सब घटनाक्रम से डोलिया काका की चिंताएं और बढ़ गई। काका अपने गमों एवं चिंताओं को परिवार के सदस्यों को जाहीर किए बिना रोजाना की तरह अपने कार्य में लगे रहते एवं काका को दिली ख्वाहिश थी कि अपनी अगली बिटिया का विवाह सरकारी नौकरी वाले लड़के से हो। काका आस–पास के गाँवों एवं अपने चिर–परिचितों को कहकर रखा था कि उन्हें अपनी बिटिया के विवाह के लायक अगर कोई सरकारी नौकरी वाले लड़के की खबर मिले तो जरूर बताना। गाँव के समीप सूयरे गाँव में एक कोटवार रहते थे। उनके बेटे की वर्तमान में नौकरी वन विभाग में लिपिक के पद पर लगी थी। डोलिया काका ने उस कोटवार जी जिनका नाम रामदुलारे था, उनसे संपर्क किया एवं अपनी बिटियों के विवाह के संबंध में उन्हे जानकारी दी एवं घर आने का न्यौता दिया। रामदुलारे अपने परिवार के सदस्यों के साथ लड़की देखने आये एवं लडकी देखने के पश्चात उन्हें लडकी पसंद आ गई एवं विवाह के लिए कुछ शर्ते रख दी क्योंकि लड़का सरकारी नौकरी में जो था। लड़के के पिता ने विवाह के लिए 20 लाख रूपये की शर्त रख दी। काका ने पिश्चय किया एवं बहुत सोच–समझकर यह फैसला लिया कि अपनी कुछ जमीन बेचकर अपनी बेटी का विवाह उसी परिवार में करवाऊँगा। अपनी कुछ जमीन बेचकर अपने बिटिया का विवाह संपन्न करवाया। ठंड का माह था। गाँव के लोग रोजाना शाम को आग जलाकर तापा करते थे। शाम को काका अपने खेतो से कार्य पूर्ण कर घर लौट रहे थे तभी उन्हें गाँव के लोगों ने आवाज दी और कहा कि आओ काका, आग ताप लो। काका ने उत्तर दिया, ''जिनके सिर पर बेटियों का बोझ हो, उन्हें ठंड कहाँ लगती हैं।'' आज कई बदलाव हो चुके हैं –बेटी पढ़ाओ। लेकिन आज भी लोग बेटियों को बोझ ही समझते हैं। 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' की मुहिम तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक कि हम लोगों की सोच इन बेटियों के प्रति सकारात्मक नहीं होती। खैर, समाज की जिम्मेदारी रामदुलारे कोटवार साहब जैसे लोगों के पास रही तो बेटियाँ यूँ ही बोझ रहेगी। हम युवाओं को आगे बढ़ने और दहेज का बहिष्कार करने की जरूरत है।

भारतीय साहित्य और संस्कृति को हिंदी की देन बड़ी महत्त्वपूर्ण है। – सम्पूर्णानन्द।

"ताश का मर्म"

"सच्चे व्यक्ति का व्यक्तित्व नमक की तरह अनोखा होता है, जिसकी उपस्थिति याद नही रहती, मगर अनुपस्थिति प्रत्येक चीजो को बेस्वाद बना देती है"

उपमहाप्रबंधक (रसायन), मुख्यालय, नागपुर

हम ताश खेलते है, अपना मनोरंजन करते है। ताश का आधार वैज्ञानिक है व साथ साथ ही प्रकृती से भी जुडा है :–
ताश के पत्ते चार प्रकार के होते है : ईट, पान, चिडी और हुक्म। प्रत्येक 13 पत्तों को मिलाकर कुल 52 पत्ते होते है। पत्ते–एक्का से दस्सा, गुलाम, रानी एवं राजा ।

1.	52 पत्ते	–	52 सप्ताह
2.	4 प्रकार के पत्ते	–	4 ऋतु
3.	प्रत्येक रंग के 13 पत्ते	–	प्रत्येक ऋतु के 13 सप्ताहे
4.	सभी पत्तो का जोड	–	1 से 13 = 91X 4 = 364
5.	एक जोकर	–	364+1 = 365 दिन = 1वर्ष
6.	दूसरा जोकर गिने	–	365 + 1= 366 दिन = लीप वर्ष
7.	52 पत्तों में 12 चित्र वाले पत्ते	–	12 महीने
8.	लाल और काल रंग	–	दिन और रात पत्तो का अर्थ

1	दुक्की	पृथ्वी और आकाश
2	तिक्की	ब्रम्हा, विष्णु महेश
3	चौकी	चार वेद (अथर्ववेद, सामवेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद)
4	पंजी	पंच (प्राण, अपान, व्यान उदान, समान)
5	छक्की	षड रिपू (काम, क्रोध, मद, मोह, मत्सर, लोभ)
6	सचि	सात सागर
7	नब्वा	नौ गृह
8	दस्सी	दस इंद्रिया
9	गुलाम	मन की वासना
10	रानी	माया
11	राजा	सबका शासक
12	एक्का	मनुष्य का विवेक

अतएव ताश मनोरंजन साधन के साथ साथ वैज्ञानिक एंव प्राकृतिक तथ्यों से जुडा हुआ हमारे जीवन के गणित को भी परिभाषित करता है ।

चित्र पर आधारित पुरस्कृत कहानी

मेरा गर्भ

— मीना ड्रेझन

एक बडा सा आधुनिक शहर जहाँ के लोग सुशिक्षित, हर घर में कोई ऑफिसर, डॉक्टर मिल ही जायेगा और ऐसी ही जगह पर रामनारायण ने अपने गाँव से जहाँ वह पैदा हुये थे, बड़े हुए थे वहीं से अपनी मित्र की एक सुंदर बेटी को अपने बेटे के लिए बहु बनाने का फैसला किया था। लड़की भी पढ़ी–लिखी समझदार थी। इसलिए रामनारायण को वो भा गई। अपने पुत्र का ब्याह उससे करवाकर वो बहुत ही प्रसन्न थे। परंतु उनकी पत्नी को गाँव की लड़की लाना नागवार था, वह तो चाहती थी कि उनके बेटे के लिए कोई शहर के पैसे वाले की लड़की आए, पर पति के आगे कुछ कह नहीं सकती थी। बड़े ही धूमधाम से रामनारायण के पुत्र का ब्याह रजनी से हो गया।

रजनी जब ससुराल में आई तब उसका स्वागत सत्कार तो बड़े ही अच्छे से हुआ क्योंकि रजनी बहुत ही सुंदर और संस्कारी लग रही थी। घर के सारे लोग रामनारायण जी को बधाई दे रहे थे। कुछ दिन सुख–शांति से गुजर गये। रजनी अपने काम में अपने कर्तव्य में बिलकुल भी पीछे नहीं रहती थी। वह बाहर जाकर ऑफिस में काम तो नहीं करती थी पर घर के कामों में माहिर थी। उसका हाथ किसी भी काम को करना जानता था। ऐसे ही एक दिन खबर आई कि रजनी माँ बनने वाली है। घर में, सब बहुत ही खुश थे। सब लोग अब रजनी का पूरा ध्यान रखने लगे। सास तो जैसे आने वाले के स्वागत में पलके बिछाये बैठी थी। एक दिन सासु माँ ने रजनी को प्यार से खाना खिलाते हुए कहा कि बहु! मुझे तो अपने पोते का मुँह देखना है, मैं चाहती हूँ कि मेरे घर में पोता ही हो।'' पर, माँ जी ये मेरे हाथ में तो नहीं है। अगर पोती हो गई तो? तब सास ने गुस्से से रजनी को कहा, ''बहु, ऐसे बुरे ख्याल मन में नहीं लाते। अच्छा सोचने पर पोता ही होगा।'' रजनी कोई दलील नहीं दे सकी और शांत हो गई।

कुछ दिनों बाद उनके घर में एक नन्ही परी ने जन्म लिया। ये देख पति और सास दोनों ही नाराज हो गये। उनकी खुशी जैसे हवा बन कर उड़ गई पर रामनारायण जी खुश थे क्योंकि उनके घर में लक्ष्मी आई थी। पर इन सब बातों पर माँ बेटे का ध्यान कहाँ जाता था वो तो बस लड़का चाहिए ऐसा ही कहते थे। आगे सासु माँ का रवैया बदल गया था। वह बात–बात पर बहु को ताने मारने से नहीं चूकती थी। हर बात पर टोका–टाकी करने लगीं थीं। पर रजनी सब कुछ चुपचाप सहन कर रही थी। जब दूसरी बार रजनी माँ बनने को हुई तब फिर से रजनी की सास ने रट्टा लगाने लग गई कि अब की बार तो पोता ही चाहिए। पर रजनी कुछ नहीं कहती। कुछ दिनों बाद रजनी के लक्षण पहले जैसे दिखने लगे तो सास को आभास होने लगा की कहीं फिर से लड़की तो नहीं हो जायेगी। इसलिए वो रजनी को डॉक्टर के पास ले जाकर पता लगाना चाहती थी कि इसके पेट में फिर से लड़की तो नहीं है पर ऐसा हो नहीं सका क्योंकि डॉक्टर ने ऐसा करने से साफ मना कर दिया।

तब सास ने सोचा की इसका गर्भ गिरा दिया जाए पर एक माँ ऐसा कैसे सोच सकती थी। परंतु उसकी सास ने और उसके पति ने उसकी एक न चलने दी और उसका गर्भ गिरा दिया। रजनी रोती बिलखती रह गई वो सोचने लगी कि क्या ये वो पढ़–लिखकर आधुनिक शहर है जहाँ आज भी लड़का–लड़की में भेद किया जाता है। इससे अच्छा तो हमारा गाँव है, जहाँ बहुत शिक्षित लोग नहीं है पर ऐसी रूढ़ मानसिकता वाले लोग भी नहीं है। अब रजनी ने एक फैसला लिया कि चाहे जो हो जाए वो अब माँ नहीं बनेगी और अपनी एक ही बेटी को पढ़ा–लिखाकर अच्छी बच्ची बनायेगी। सोचो, अगर हम आज भी नहीं सुधरे कि लड़का हो या लड़की दोनों ही एक ही गर्भ से पैदा होते है तो एक दिन ऐसा आयेगा कि हम अपने ही कर्मो पर पछतायेंगे।

परमात्मा से प्रार्थना है कि हिंदी का मार्ग निष्कंटक करें। – हरगोविंद सिंह।

"पोरी संगोपन"

सुलभा टी. कुभरे, मनसर खान

वैसे तो उन शब्दों की कमी हमेशा ही रहती है जिसमें स्त्रीत्व की भूमिका एंव स्त्रीत्व के गुणों को पूर्णतः वर्णित किया जा सके। परन्तु शब्दों की कमी से स्त्रीत्व की महत्ता कम नहीं हो सकती क्योंकि जब तक जीवन का अस्तित्व है तब तक स्त्री का भी अस्तित्व है। क्योंकि स्त्री ही है जो जीवनचक्र को चलायमान रखने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। परन्तु जिस स्त्रीत्व की जीवनचक्र में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका रही है उसे स्त्रीत्व की विगत अनेक दशकों से उपेक्षा दुर्लक्ष एवं हानी होती रही है। ये बड़े शर्म की बात है कि समाज के हर वर्ग में स्त्रियों का अपमान होता रहा है। ये हमारी विशाल एवं विविधतापूर्ण संस्कृति की सभ्यता का असभ्य एवं घृणित रूप है।

ऐसा ही घृणित उदाहरण अनेक बार हमारे सामने आता है–स्त्री भ्रूणहत्या, कन्या भ्रूणहत्या का। इससे हमारे समाज में अनियंत्रण स्थापित होता है। अनेक स्थान तो ऐसे हैं जहाँ विवाह के लिये कन्याओं का उपलब्ध हो पाना कठिन हो जाता है। इसका सबसे कुख्यात उदाहरण हमारे देश का पश्चिमोत्तर भाग है।

इतना सब होने के बाद भी आज स्त्रियाँ प्रत्येक क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं चाहे कला, रक्षा, विज्ञान, चिकित्सा, क्रीड़ा व राजनीति ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ स्त्रियों की उपस्थिति न हो – उदाहारणार्थ इंदिरा गांधी, कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, कमला हैरिस, पी.टी. उषा, मैरीकॉम, मदर टेरेसा, रानी लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई होलकर, रानी दुर्गावती, सावित्रीबाई फुले इत्यादि। ऐसे अनेक नाम हैं जिन्होंने राष्ट्र के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं।

जब हम एक पौधे को बोते हैं, हमें पता होता है कि उस समय वो पौधा हमें न फूल, न सुगंध और न ही छाया दे सकता है पर वही पौधा जब पेड़ बन जाता है तो वह हमें सबकुछ देता है। उस समय उसका भाव निस्वार्थ होता है।

मॉयल में कोरोना वारियर्स का सम्मान..

जगप्रेरणा बालाघाट।

मॉयल लिमिटेड भरवेली खदान के अभिकर्ता एवं उपमहाप्रबंधक समूह-1 राजेश भट्टाचार्य खान प्रबंधक निलेश खेड़ीकर भूमिगत प्रबंधक श्री जैन, वरिष्ठ प्रबंधक कार्मिक असीम शेख, मॉयल कामगार संगठन के पदाधिकारी अशोक गेडाम, वेदप्रकाश दीवान, राजेश आचार्य, जितेन्द्र धावड़े इत्यादि के हाथों कोरोना महामारी में अपना उत्कृष्ट योगदान देने वाले मॉयल के स्वास्थ्य कर्मचारी एवं अन्य उनके सहयोगी वारियर्स को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रशासनिक भवन परिसर में आयोजित कार्यक्रम में प्रशस्ती पत्र एवं गुलाब का फूल प्रदान कर उनका सम्मान किया गया।

इसके अंतर्गत डॉ. असफाक खान, डॉ. विशेष नाग, सुनील रंगारी, कृष्ण कुमार गिरारे, श्रीमती प्रज्ञा मुखर्जी, नरेन्द्र देवुलकर, श्रीमती कृपा दिवाकर, श्रीमती उज्जवला लाल, श्रीमती भूमिका आनंद कापसे, विनोद कुमार मीणा, अशोक गेडाम, सुरेश बाहे, अब्दुल रफीक, शकील खान, राकेश सहारे, राजेश पटले, श्रीमती शकुन गेडाम, श्रीमती रेवतन नगपुरे, श्रीमती वच्छलाबाई कनौजे, श्रीमती रंजिता उइके, श्रीमती सुषमा चापेश्वर, श्रीमती रूपरेखा बोम्बरे, कुमारी निशा वराडे, श्रीमती रानू बनोटे, श्रीमती तनूजा परिमल, कुमारी नुपूर डोंगरे, कुमारी रीतु मोहारे, श्रीमती आरती सलामे, श्रीमती मीनू बाई, श्रीमती रानी बाई, श्रीमती रेखा बाई, श्रीमती अनिता परिहार, श्रीमती मुन्नीबाई समुद्रे, वकील खान, वहीद खान, दीनदयाल सिरसाठे, बेनीराम उइके, धनसिंह प्रभु, दीपक माहुलाल, टेकचंद मदनकर, सतीश द्वारका प्रसाद ब्रम्हे, नरेश झारिया, रविन्द्र पारधी, राहुल गजभिये, वहीद मिर्जा सहित 78 कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट सेवा हेतु प्रशस्ती पत्र प्रदान कर सम्मान किया गया।

दाहिनी हो पूर्ण करती है अभिलाषा पूज्य हिंदी भाषा हंसवाहिनी का अवतार है। – अज्ञात।

माता-पिता को समर्पित

पूजा वर्मा, राजभाषा अधिकारी, मुख्यालय, नागपुर

पति पत्नी आने वाले त्योहार की खरीदारी को लेकर बहुत जल्दीबाजी में थे।

पति ने पत्नी से कहा, – ''जल्दी करो, मेरे पास टाईम नहीं है और भी जरुरी काम है ऑफिस का।''

दोनों घर से निकलने लगे।

तभी बाहर बरामदे में बैठी बूढ़ी माँ पर उसके बेटे की नजर पड़ गई।

वह माँ के पास जाकर बोला–
''माँ, हम लोग त्योहार की खरीदारी के लिए बाजार जा रहे हैं। आपको कुछ चाहिए तो मुझें बता दीजिए।''

माँ ने कहा–मुझे कुछ नहीं चाहिए, बेटा।

बेटे के बार–बार बहुत जोर देकर कहने पर माँ बोली–ठीक है, तुम रुको, मैं अभी लिख कर देती हूं उसके कुछ देर बाद मां ने बेटे को कुछ लिखकर एक कागज थमा दिया।

बेटा गाड़ी के ड्राइविंग सीट पर बैठते हुए अपनी पत्नी से बोला–

देखा, माँ को भी कुछ चाहिए था लेकिन बोल नहीं रही थी, मेरे जिद करने पर लिस्ट बना कर दी है।

रोटी और वस्त्र के अलावा भी इंसान को जीवन में बहुत कुछ चाहिए होता है।

अच्छा बाबा ठीक है, पर पहले मैं अपनी जरूरत का सारा सामान लूंगी।

बाद में आप अपनी मां की लिस्ट देखते रहना....पत्नी बोली।

दोनों गाड़ी से बाजार के लिए निकल पड़े।

चार घंटों तक पूरी खरीदारी करने के बाद पत्नी बोली–मैं तो बहुत थक गयी हूं, कार में एसी चला कर बैठती हूं, आप अपनी मां का सामान उनका लिस्ट देख कर खरीद लो।

हिंदी ही के द्वारा अखिल भारत का राष्ट्रनैतिक ऐक्य सुदृढ़ हो सकता है। – भूदेव मुखर्जी।

माँ ने इस त्योहार पर क्या मँगाया है जरा मुझे भी बताना।
पति ने मां का दिया हुआ कागज पत्नी को ही पकड़ा दिया।
बाप रे! इतनी लंबी लिस्ट,
पता नहीं क्या क्या मंगाया है।
और बनो श्रवण कुमार। कहते हुए पत्नी गुस्से से पति की ओर देखते हुए वापस उसे लिस्ट पकड़ा दी।
पर ये क्या?
पति की आंखों में आंसू?
लिस्ट पकड़े हुए हाथ
सूखे पत्ते की तरह कांप रहा था।
उसका पूरा शरीर बेसुध था।
पत्नी बहुत घबरा गई। क्या हुआ?
ऐसा क्या मांग लिया है तुम्हारी मां ने?
कहकर पति के हाथ से पर्ची झपट ली।

हैरान थी पत्नी भी, क्योंकि इतनी बड़ी पर्ची में बस चंद शब्द ही लिखे थे।
उस कागज में लिखा था—
"मेरे कलेजे के टुकड़े, मेरे आंखों के तारे, मेरे बेटे।
मुझे इस त्योहार पर क्या किसी भी त्योहार पर कभी कुछ नहीं चाहिए।
फिर भी तुम जिद कर रहे हो तो...
अगर शहर की किसी दुकान में,
मिल जाए तो फुरसत के कुछ पल मेरे लिए लेते आना....
क्योंकि ढ़लती हुई सांझ हूँ अब मैं, मुझे गहराते अंधियारे से डर लगने लगा है,
मुझें अकेलापन से डर लगने लगा है।
मेरा ये बुढ़ापा मुझे कचोटता है,
मुझें अब तन्हाई से डर लगने लगा है।
तो जब तक मैं जिंदा हूँ,
जब तक मेरी साँसें चल रही हैं,
जब तक मेरी धड़कनों में आवाज है,
कुछ पल बैठाकर मेरे पास।
कुछ देर के लिए ही सही बाँट लिया कर मेरे बुढ़ापे का अकेलापन.... ।
बिन दीप जलाए ही रोशन हो जाएगी मेरी जीवन की ये काली सांझ... ।
कितने साल हो गए बेटा, तुझे स्पर्श नहीं किया।
एक बार फिर से,
आ मेरी गोद में सर रख और मैं ममता भरी हथेली से सहलाऊं तेरे सर को।
एक बार फिर से इतराए मेरा ह्रदय
मेरे अपनों को करीब, बहुत करीब पा कर....
और मुस्कुरा कर मिलूं मौत के गले ....
क्या पता? अगले त्योहार तक रहूँ न रहूँ......
दोनों रोने लगे।

दोस्तों!
हमारे माता—पिता को सिर्फ हमारा प्रेम चाहिए,
हमारा साथ चाहिए,
हमारा आदर और सम्मान चाहिए।
और कुछ नहीं।

तैयारी ● केंद्रीय मंत्री सिंह की मौजूदगी में मॉयल की विभिन्न सुविधाओं का उद्घाटन

देश में इस्पात के आयात पर निर्भरता घटाएंगे

नागपुर। 31 अक्तूबर। लोस सेवा

केंद्रीय इस्पात मंत्री रामचंद्र प्रसाद सिंह ने कहा कि आज हमारे देश में जरूरत का 50 फीसदी इस्पात का ही उत्पादन हो रहा है. शेष 50 फीसदी इस्पात का आयात किया जा रहा है. आयात को घटाकर आत्मनिर्भर बनना पहली प्राथमिकता है.

वे राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित मॉयल की विभिन्न सुविधाओं के उद्घाटन समारोह में बोल रहे थे. इस दौरान केंद्रीय सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी, राज्य के पशु

मॉयल की विभिन्न सुविधाओं का उद्घाटन करते केंद्रीय मंत्री रामचंद्र प्रसाद सिंह और नितिन गडकरी. साथ में अन्य अतिथिगण.

पालन, दुग्ध विकास, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री सुनील केदार, सांसद विकास महात्मे, इस्पात मंत्रालय की अतिरिक्त सचिव एवं वित्त सलाहकार सुकृति लिखी, संयुक्त सचिव रुचिका गोविल, मॉयल के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक (सीएमडी) मुकुल चौधरी उपस्थित थे. कार्यक्रम में केंद्रीय इस्पात और ग्रामीण विकास राज्यमंत्री फग्गन सिंह कुलस्ते ऑनलाइन शामिल हुए.

सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय इस्पात नीति के तहत 300 मिलियन टन उत्पादन का लक्ष्य है. फिलहाल 1.3 मिलियन टन उत्पादन हो रहा है. उत्पादन को बढ़ाने का लक्ष्य है. कामगारों की नीति पर उन्होंने कहा कि अगर नीति से कामगारों को नुकसान हो रहा है तो उस पर पुनर्विचार होना चाहिए.

इस अवसर पर मॉयल की विभिन्न सुविधाओं जैसे चिकला खान में द्वितीय वर्टिकल शॉफ्ट एवं चिकला ▸▸ शेष पेज 2 पर...

आयात की जरूरत ही नहीं पड़नी चाहिए : गडकरी

केंद्रीय सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में मैगनीज की कमी नहीं है. हमें बाहर से आयात की जरूरत ही नहीं पड़नी चाहिए. नई खदानें शुरू करने और उत्पादन बढ़ाने पर जोर देना चाहिए. इससे आयात भी घटेगा और रोजगार के नए अवसर भी उपलब्ध होंगे. उन्होंने कहा कि मॉयल को 19 लाख मीट्रिक टन उत्पादन के लिए एन्वायर्नमेंटल क्लियरेंस प्राप्त है जबकि उसका उत्पादन 11 से 12 लाख मीट्रिक टन ही है. इसे बढ़ाना जरूरी है.

हिंदी का शिक्षण भारत में अनिवार्य ही होगा। – सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या।

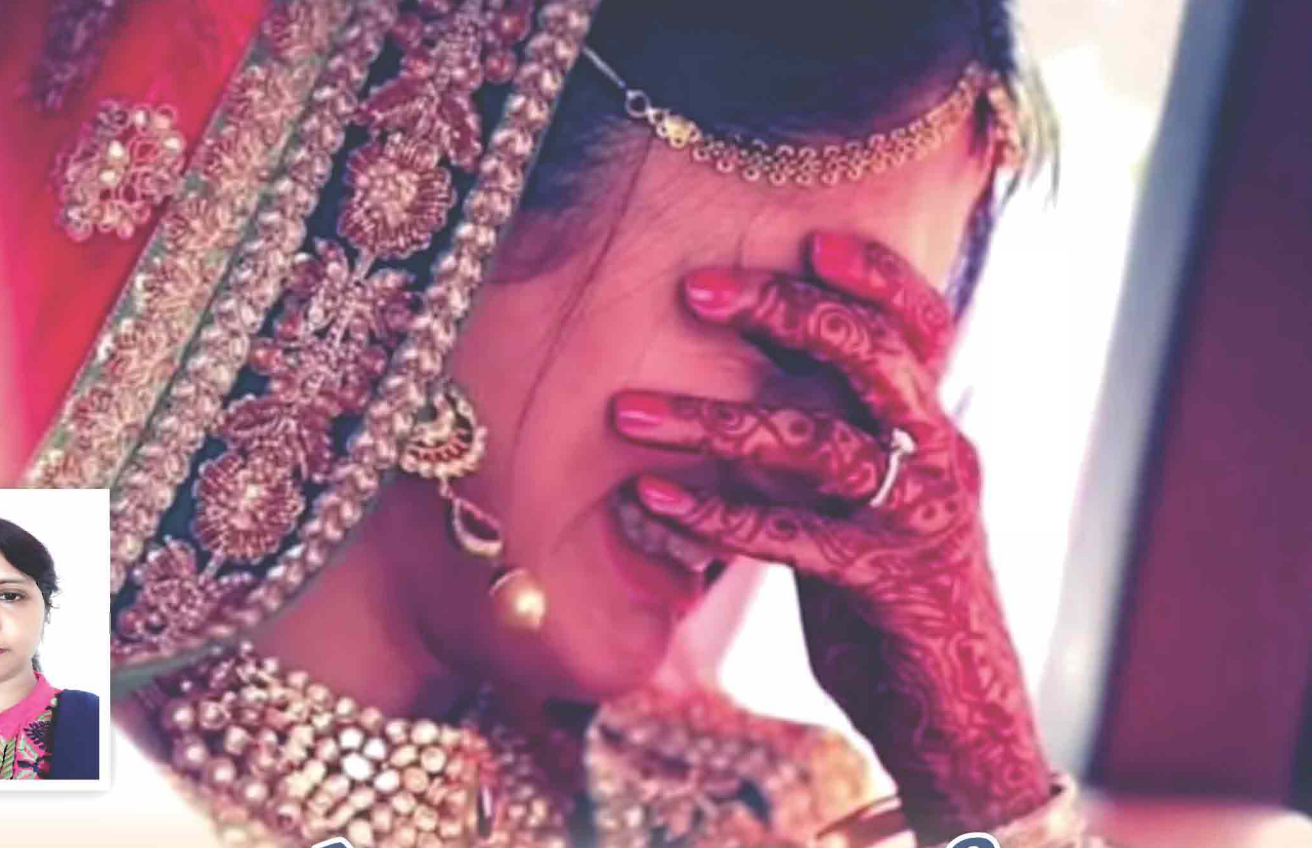

भाग्य से बडा कुछ नही

पूजा वर्मा, राजभाषा अधिकारी, मुख्यालय, नागपुर

एक सेठ जी थे –
जिनके पास काफी दौलत थी।
सेठ जी ने अपनी बेटी की शादी
एक बड़े घर में की थी।
परन्तु बेटी के भाग्य में
सुख न होने के कारण
उसका पति जुआरी, शराबी निकल गया।
जिससे सब धन समाप्त हो गया।

बेटी की यह हालत देखकर
सेठानी जी रोज सेठ जी से कहती कि
आप दुनिया की मदद करते हो,
मगर अपनी बेटी परेशानी में
होते हुए उसकी मदद क्यों नहीं करते हो?
सेठ जी कहते कि
जब उनका भाग्य उदय होगा तो
अपने आप सब मदद करने को तैयार हो जायेंगे...

एक दिन सेठ जी घर से बाहर गये थे कि,
तभी उनका दामाद घर आ गया।
सास ने दामाद का आदर–सत्कार किया
और बेटी की मदद करने का विचार
उसके मन में आया कि
क्यों न मोतीचूर के लड्डुओं में
अशर्फियाँ रख दी जाये...
यह सोचकर सास ने
लड्डूओ के बीच में अशर्फियाँ
दबा कर रख दी
और दामाद को टीका लगाकर विदा करते समय
पांच किलों शुद्ध देशी घी के लड्डू,
जिनमे अर्शफिया थी, दे दी...
दामाद लड्डू लेकर घर से निकल चला।

दामाद ने सोचा कि
इतना वजन कौन लेकर जाये?
क्यों न,
यहीं मिठाई की दुकान पर बेच दिये जाये
और दामाद ने वह लड्डुओं का पैकेट
मिठाई वाले को बेच दिया
और पैसे जेब में डालकर चला गया।

हिंदी, नागरी और राष्ट्रीयता अन्योन्याश्रित है। – नन्ददुलारे वाजपेयी।

उधर सेठ जी बाहर से आये तो
उन्होंने सोचा, घर के लिये मिठाई की दुकान से
मोतीचूर के लड्डू लेता चलूँ
और सेठ जी ने दुकानदार से लड्डू मांगे...
मिठाई वाले ने वही लड्डू का पैकेट
सेठ जी को वापिस बेच दिया।

सेठ जी लड्डू लेकर घर आये..
सेठानी ने जब लड्डूओं का वही पैकेट देखा
तो सेठानी ने लड्डू फोड़कर देखे,
अशर्फिया देख कर अपना माथा पीट लिया।

सेठानी ने सेठ जी को
दामाद के आने से लेकर जाने तक
और लड्डुओं में अर्शफिया छिपाने की बात कह डाली...

सेठ जी बोले कि
भाग्यवान मैंने पहले ही समझाया था कि
अभी उनका भाग्य नहीं जागा...
देखा! मोहरें न तो दामाद के भाग्य में थी
और न ही मिठाई वाले के भाग्य में।

इसलिये कहते हैं कि भाग्य से ज्यादा
और समय से पहले
न किसी को कुछ मिला है और न मिलेगा!
इसीलिये ईश्वर जितना दे उसी में संतोष करो।
झूला जितना पीछे जाता है, उतना ही आगे आता है।
एकदम बराबर।

सुख और दुख दोनों ही जीवन में बराबर आते हैं।
जिंदगी का झूला पीछे जाए, तो डरो मत,
वह आगे भी आएगा।

बहुत ही खूबसूरत पंक्तियाँ

किसी की मजबूरियाँ पे न हँसिये,
कोई मजबूरियाँ खरीद कर नहीं लाता..!

डरिये वक्त की मार से,
बुरा वक्त किसीको बताकर नहीं आता..!

अकल कितनी भी तेज हो,
नसीब के बिना नहीं जीत सकती..!
बीरबल अकलमंद होने के बावजूद,
कभी बादशाह नहीं बन सका...!!

न तुम अपने आप को गले लगा सकते हो,
न हीं तुम अपने कंधे पर सर रखकर रो सकते हो,
एक दूसरे के लिये जीने का नाम ही जिंदगी है!

इसलिये वक्त उन्हें दो जो तुम्हे चाहते हों दिल से,
क्योंकि रिश्ते पैसो के मोहताज नहीं होते।

भरवेली मॉयल परिसर में स्वतंत्रता दिवस की 75वीं वर्षगांठ मनाई गई

भरवेली(जनपक्ष/16अगस्त)मॉयल लिमिटेड भरवेली खदान के अभिकर्ता एवं उपमहाप्रबंधक समूह-1 राजेश भट्टाचार्य खान

प्रबंधक निलेश खेड़ीकर भूमिगत प्रबंधक श्री जैन, वरिष्ठ प्रबंधक कार्मिक असीम शेख, भूगर्भ विभाग अधिकारी विनय राहंगडाले, मॉयल कामगार संगठन के पदाधिकारी अशोक गेडाम, वेदप्रकाश दीवान, राजेश आचार्य, जितेन्द्र धावडे के साथ उनकी कार्यकारिणी के सभी सदस्य एवं अन्य विभागों के कर्मचारी एवं अधिकारी की उपस्थिति में प्रशासनिक भवन परिसर में ध्वजारोहण कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अपने सम्बोधन में उपमहाप्रबंधक भट्टाचार्य खान प्रबंधक खेड़ीकर ने एक स्वर में सभी को आजादी की वर्षगांठ पर बधाई देते हुए कहा कि मॉयल का देश के मैंगनीज उत्पादन क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान है। मॉयल खनन के साथ आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के विकास कार्यों में भी अपना नियमानुसार योगदान प्रदान कर रही है। इस अवसर पर हम अपने यूनियन के प्रतिनिधि एवं कामगार कर्मचारियों से अपेक्षा करते है कि जिस तरह से प्रबंधन अपने कामगार कर्मचारियों के हितों की रक्षा करते हुए उनको बेहतर से बेहतर सुविधा उपलब्ध कराने के प्रति कटिबद्ध है उसी तरह हम कामगार साथियों से अपेक्षा करते है कि वह अनुपस्थिति का जो ग्राफ उसको कम करेगें, नियमित रूप से वह ड्यूटी पर आयेगें। बाकी उनकी अनुपस्थिति से जो कार्य प्रभावित होते है उससे बचा जा सके। कंपनी अपने वर्कर को सभी तरह के लाभ एवं सुविधा प्रदान करने के लिये निरंतर गतिशील है। इसी तरह से अन्य वक्ताओं ने भी कामगारों की अनुपस्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए इसमें सुधार किये जाने की अपेक्षा किया है। इसके पूर्व मॉयल अधिकारियों द्वारा रविन्द्रनाथ टैगोर माध्यमिक शाला एवं मॉयल कामगार संगठन कार्यालय में आयोजित ध्वजारोहण कार्यक्रम में भाग लेकर अपनी उपस्थिति दर्ज करायी। वहीं प्रशासनिक भवन कार्यक्रम में स्वच्छ घर प्रतियोगिता एवं स्वस्थ बालक स्पर्धा के नाम घोषित करने के साथ कामगार कर्मचारी अधिकारियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने एवं अधिक से अधिक वृक्षारोपण को अपने घर से लेकर बाहर तक प्राथमिकता देने के दृष्टिकोण से श्री भट्टाचार्य श्री खेड़ीकर फलदार पौधों का वितरण किया गया। ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपने घर में कम से कम पांच पौधे व्यवस्थाओं के अनुसार लगाये, जिससे पर्यावरण को नई मजबूती मिलने के साथ भूमि पर हरियाली की चादर बिछे। क्योंकि पर्यावरण की रक्षा के लिये वृक्षारोपण वरदान है।

मॉयल में कोरोना वारियर्स का सम्मान

मॉयल लिमिटेड भरवेली खदान के अभिकर्ता एवं उपमहाप्रबंधक समूह-1 राजेश भट्टाचार्य खान प्रबंधक निलेश खेड़ीकर भूमिगत प्रबंधक श्री जैन, वरिष्ठ प्रबंधक कार्मिक असीम शेख, मॉयल कामगार संगठन के पदाधिकारी अशोक गेडाम, वेदप्रकाश दीवान, राजेश आचार्य, जितेन्द्र धावड़े इत्यादि के हाथों कोरोना महामारी में अपना उत्कृष्ट योगदान देने वाले मॉयल के स्वास्थ्य कर्मचारी एवं अन्य उनके सहयोगी वारियर्स को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रशासनिक भवन परिसर में आयोजित कार्यक्रम में प्रशस्ती पत्र एवं गुलाब का फूल प्रदान कर उनका सम्मान किया गया। इसके अंतर्गत डॉ. असफाक खान, डॉ. विशेष नाग, सुनील रंगारी, कृष्ण कुमार गिरारे, श्रीमती प्रज्ञा मुखर्जी, नरेन्द्र देवुलकर, श्रीमती कृपा दिवाकर, श्रीमती उज्जवला लाल, श्रीमती भूमिका आनंद कापसे, विनोद कुमार मीणा, अशोक गेडाम, सुरेश बाहे, अब्दुल रफीक, शकील खान, राकेश सहारे, राजेश पटले, श्रीमती शकुन गेडाम, श्रीमती रेवतन नगपुरे, श्रीमती वच्छलाबाई कनौजे, श्रीमती रंजिता उइके, श्रीमती

सुषमा चापेश्वर, श्रीमती रूपरेखा बोम्बरे, कुमारी निशा वराडे, श्रीमती रानू बनोटे, श्रीमती तनूजा परिमल, कुमारी नुपूर डोंगरे, कुमारी रीतु मोहारे, श्रीमती आरती सलामे, श्रीमती मीनू बाई, श्रीमती रानी बाई, श्रीमती रेखा बाई, श्रीमती अनिता परिहार, श्रीमती मुन्नीबाई समुद्रे, वकील खान, वहीद खान, दीनदयाल सिरसाठे, बेनीराम उइके, धनसिंह प्रभु, दीपक माहुलाल, टेकचंद मदनकर, सतीश द्वारका प्रसाद ब्रम्हे, नरेश झारिया, रविन्द्र पारधी, राहुल गजभिये, वहीद मिर्जा सहित 78 कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट सेवा हेतु प्रशस्ती पत्र प्रदान कर सम्मान किया गया।

हिंदी साहित्य धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष इस चतुरूपुरूषार्थ का साधक अतएव जनोपयोगी। - (डॉ.) भगवानदास।

भारतीय समाज

अमित कुमार सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (कार्मिक), तिरोडी खान

सोसायटी अर्थात समाज मानव व्दारा जीवन की व्यवस्था हेतु बनाया गया एक ढाँचा है जिसके अपने कुछ कानून और मान्यताएं होती हैं। हम सभी सामाजिक सदस्य है हमे उन पुर्व निर्धारित नैतिक मानदंडो का पालन करना पडता है एक व्यक्ति के चहुमुखी विकास, सुरक्षा के लिए समाज का होना बेहद जरूरी है।

अगर आज के भारतीय समाज की बात करें तो जाति और वर्ण व्यवस्था इसके मूल मे दिखाई पड़ती है। एक सामाजिक संगठन के रूप में इस व्यवस्था का मूल्यांकन किया जाए तो कई खूबियों के साथ ही कुछ बुराइयाँ भी नजर आती हैं।

किसी भी राष्ट्र के चारित्रिक, नैतिक, आर्थिक उत्थान के लिए प्रत्येक समाज का समुचित विकास जरूरी है। भारतीय समाज आज भी आपसी मेलजोल, भाईचारे और सामान्य नियम कायदों की नजर से पश्चिमी व यूरोपीय समाज की तुलना में एक आदर्श सोसायटी मानी जाती है।

एक सामाजिक प्राणी होने के नाते हमें अपनी जड़ों को मजबूत करने की आवश्यकता है। समाज रूपी जड़े ही हमारे देश को एक बनाए रखने और आगे बढ़ाने में बड़ी भूमिका निर्वहन करती हैं। एक आदर्श नागरिक होने के नाते हमे सामाजिक मर्यादाओं के तहत इसके विकास की दिशा में काम करते रहना चाहिए।

डियर जिंदगी

प्रीतम पाठक, तिरोडी माईन

आज का युग यानी आधुनिकता की ओर सभी के बदलते कदम आधुनिकता हमारे बदलते व्यवहार मे पहनावे मे बातचित में एवं सभी कार्यकलापों में आसानी से देखी व समझी जा सकती है। कुछ पा लेने की जिद हर किसी के दिल में है चाहे वो सही हो या गलत। लेकिन सही फैसले लेकर जिंदगी को डियर जिंदगी बनाकर जीने में ही जीवन की सफलता छिपी है। जिंदगी यानी जिसमें जी–जान लग जाये जिंदगी हमारे किये गए कर्मों के रिजल्ट पर अपना परिणाम देती है यह बात सभी जानते हैं।

एक बच्चा पाहड़ो पर जाके जोर से चिल्लाता है जब वही चीख वापस पलट के उसे सुनाई देती है तो वह डर के अपनी माँ के पास भाग जाता है और अपनी माँ को सारी बात बताता है यह सुनकर माँ सारी बात समझ जाती है तब माँ ने उसे कहा कि अब जाकर बोल मै तुम से बहुत प्यार करता हूँ। बच्चे ने ऐसा ही किया फिर उधर से भी ऐसी ही आवाज सुनाई दी। बच्चा खुशी–खुशी ंअपनी माँ को बोलता है मम्मी वो भी मुझसे बहुत प्यार करता है। हमारी जिंदगी भी इसी तरह की गूँज है। हमें वही मिलता है जो हम जिंदगी को देते हैं। अच्छे काम का अच्छा रिजल्ट, बुरे काम का बुरा रिजल्ट। अतः कोई भी कार्य करने से पहले हमे सोचना चाहिए कि हम क्या करने जा रहे हैं? और इसका क्या परिणम हो सकता है?

जीवन का हर क्षण अनमोल है। इसकी कोई कीमत नहीं है। जब तक जिए भरपूर जियें और हमेशा खुश रहें। दुनिया में काम किसी का नहीं रूकता। लेकिन काम का तरीका आप को लम्बे समय तक सफलता के शीर्ष पर टिकाये रख सकता है। कोशिश करनी चाहिये कि जिंदगी–जिंदगी ना हो कर 'डियर जिंदगी' हो। जिसमें फूलों सी महक आती हो झरने जैसी छनछनाहट हो प्यार का भंडार हो और अनलिमिटेड खुशीयाँ हों।

अब हिंदी ही माँ भारती हो गई है- वह सबकी आराध्य है, सबकी संपत्ति है। – रविशंकर शुक्ल।

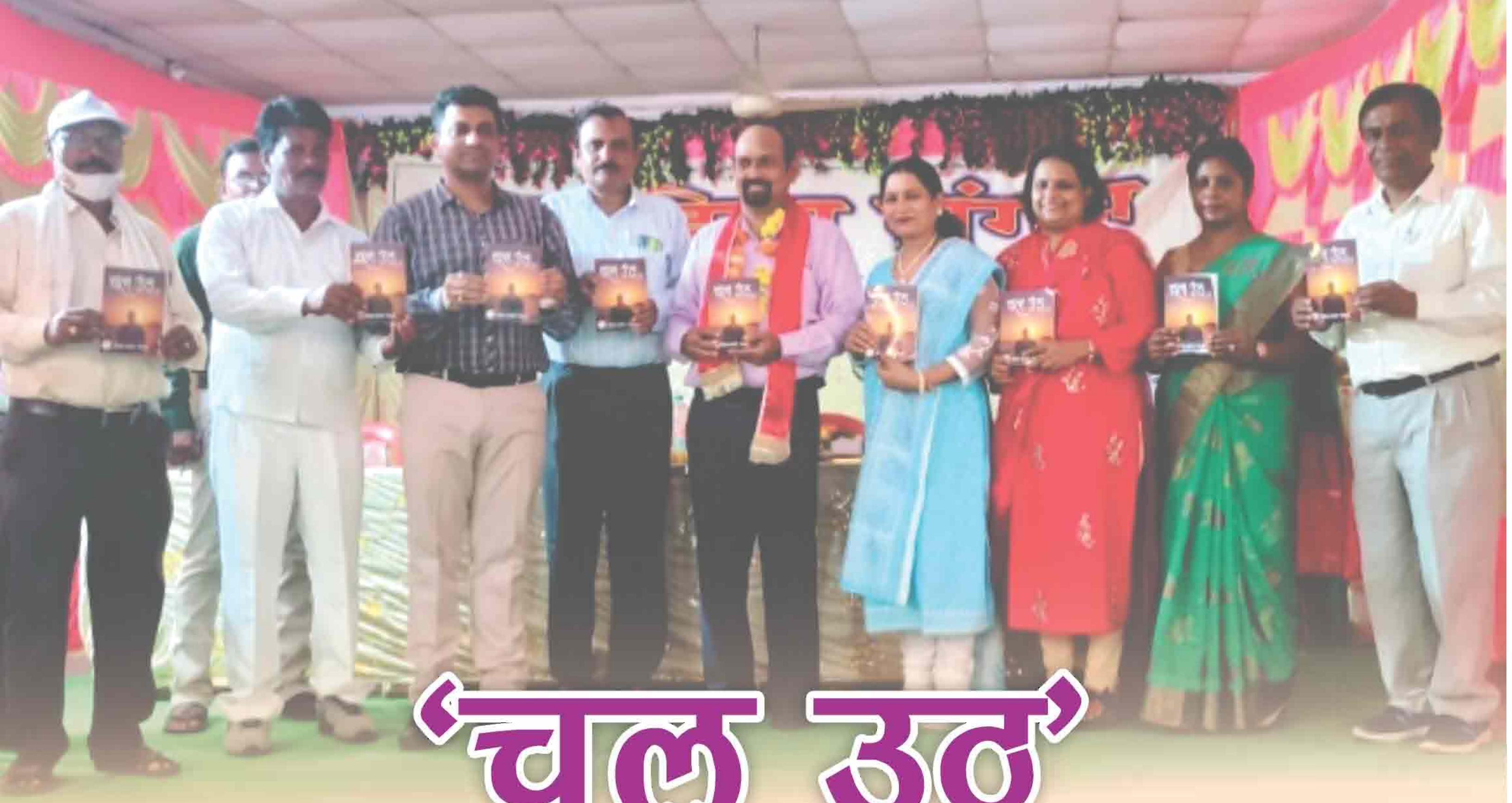

'चल उठ'

दिनेश कनोजे 'देहाती' के काव्य संग्रह 'चल उठ' का लोकार्पण

तिरोड़ी की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था 'साहित्य संगम' के तत्वावधान में जिला स्तरीय साहित्यकार सम्मान समारोह 30 सितंबर को मॉयल मंगल भवन में अपनी पूर्ण भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम अध्यक्ष श्री सुधीर पाठक, मॉयल खान प्रबंधक, मुख्य अतिथि श्रीमती पूजा वर्मा, राजभाषा अधिकारी मॉयल नागपुर, विशेष अतिथि डॉ प्रीति समकित सुराना, वारासिवनी, ग्राम प्रधान श्री आनंद राव ब्रम्हैया मंचासीन अतिथियों के साथ श्री अमित सिंह, वरिष्ठ कार्मिक प्रबंधक, श्री सोमित डे, प्रमुख यांत्रिकी, श्री दीपक रत्नपारखी सहायक खान प्रबंधक, श्री मनीष सूर्यवंशी, संरक्षक साहित्य संगम, की विशेष उपस्थिति में मॉयल लिमिटेड तिरोड़ी खान में पदस्थ, साहित्य संगम के अध्यक्ष, हास्य व्यंग कवि दिनेश कनोजे 'देहाती' के सध्य चतुर्थ काव्य संग्रह 'चल उठ' का विमोचन एवं लोकार्पण सभी सम्मानित अतिथियों की उपस्थिति में किया गया। दिनेश कनोजे 'देहाती' इसके पूर्व **'सृजन की बेला है,'** मीठा समंदर, अहसास अपनेपन का काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। लोकार्पण के उपरांत अंतरा शक्ति वारासिवनी की निदेशक डॉ प्रीति सुराना, संदीप सोनी और कुशल जैन ने और परख क्वालिटी सर्कल तिरोड़ी के सोमित डे, मंगलू प्रसाद कठौते, राजेंद्र चौहान, जमील नाजमी, अखिलेश कुमार ने शाल श्री फल से उनका नागरिक अभिनंदन किया। 'चल उठ' काव्य संग्रह की समीक्षा अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन की निदेशक डॉ प्रीति समकित सुराना द्वारा प्रस्तुत की गई। सभा को संबोधित करते हुए खान प्रबंधक एवं कार्यक्रम अध्यक्ष श्री सुधीर पाठक ने खनन क्षेत्र में संचालित साहित्यिक गतिविधियों को सराहा और विकास के लिए हमेशा सहयोग देने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम को श्री दीपक रत्नपारखी, श्री अमित सिंह, श्री राकेश शर्मा, श्रीमती पूजा वर्मा और श्री आनंद ब्रम्हैया ने संबोधित किया। सफल मंच संचालन श्री कृष्ण कांत मिश्रा ने

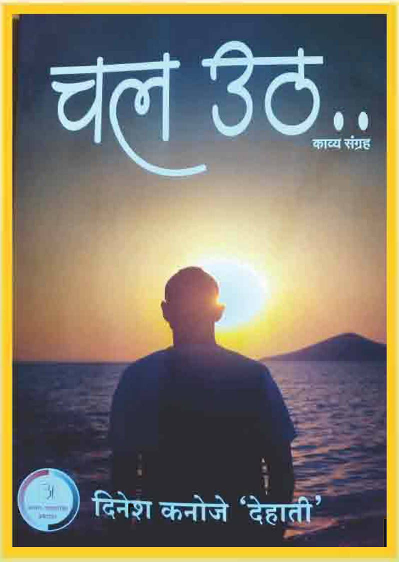

परख क्वालिटी सर्कल ने जीते 3 अवार्ड

35 वां राष्ट्रीय क्वालिटी सर्कल सम्मेलन कोयम्बतूर तमिलनाडु में दिनांक 27 से 30 दिसम्बर 2021 तक आयोजित किया गया है। जिसमें 497 संस्थानों के कुल 2048 टीम ने हिस्सा लिया। इनमें से मॉयल लिमिटेड, तिरोड़ी माइन की परख क्वालिटी सर्कल ने अपनी सफलता को दोहराते हुए प्रतिष्ठित 3 अवार्ड जीता। कम्पोजिट ड्रील के स्टार्टिंग सिस्टम के बार–बार खराब होने की समस्या के समाधान के विषय पर अपनी केस स्टडी प्रस्तुत करते हुए एक्सीलेंस अवार्ड, क्वालिटी सर्कल के उद्देश्य पर आधारित दिनेश कनोजे द्वारा लिखित एवं निर्देशित स्कीट जीवन की उमंग, क्वालिटी सर्कल के संग को बेस्ट टीम अवार्ड तथा व्यक्तिगत पुरस्कार श्रेष्ठ क्यू सी कविता के लिए मंगलू प्रसाद कठौते को प्राप्त हुआ। मॉयल लिमिटेड के अध्यक्ष श्री मुकुंद चौधरी, निदेशक मानव संसाधन विकास उषा सिंह के अभिप्रेरणा से सक्रिय परख क्वालिटी सर्कल तिरोड़ी के कोआर्डिनेटर खान प्रबंधक सुधीर पाठक, फैसीलिटेटर सोमित डे के निर्देशन में डिप्टी फैसीलिटेटर संजीव पंडा टीम लीडर दिनेश कनोजे, डिप्टी लीडर मंगलू प्रसाद कठौते एवं सदस्यों में राजेंद्र चौहान, हुबलाल जेठूमल, अखिलेश कुमार तथा यूनियन प्रतिनिधि शंकर राऊत ने सम्मेलन में सहभागिता की। परख टीम की सफलता पर अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक श्री मुकुंद चौधरी, निदेशक उषा सिंह और महामंत्री मॉयल कामगार संगठन राम अवतार देवांगन ने बधाई दी है।

मॉयल को 5 फाइव स्टार रेटिंग पुरस्कार

नागपुर। मॉयल ने हाल ही में खान मंत्रालय से खान और खनिज 2021 पर आयोजित 5वें राष्ट्रीय सम्मेलन में सतत विकास ढांचे (एसडीएफ) के तहत 5 स्टार रेटिंग पुरस्कार प्राप्त किया है। यह कार्यक्रम नई दिल्ली में मंगलवार को आयोजित किया गया था। मॉयल को कांदरी, चिकला, डोंगरीबुजुर्ग, गुमगांव और मनसर खानों के लिए यह पुरस्कार मिला है।

मॉयल के सीएमडी एम.पी. चौधरी, निदेशक वाणिज्यिक और आई/सी प्रोडक्शन एंड प्लानिंग पी.वी.वी पटनायक और संयुक्त जीएम-माइन प्लानिंग राजेश भट्टाचार्य ने यह प्रतिष्ठित पुरस्कार केंद्रीय कोयला, खान और संसदीय कार्य मंत्री प्रल्हाद जोशी के हाथों प्राप्त किया। 5 फाइव स्टार रेटिंग का दर्जा न केवल खदान संचालकों के लिए एक प्रतिष्ठा की बात है, बल्कि यह विभिन्न हितधारकों

के बीच विश्वास पैदा करने और आम आदमी के बीच खनन पहचान की सामाजिक स्वीकृति और छवि निर्माण को बढ़ाने में भी मदद करेगा। मॉयल के सीएमडी ने प्रसन्नता व्यक्त की और इस उपलब्धि के लिए मॉयल टीम को बधाई दी।

भाषा और राष्ट्र में बड़ा घनिष्ठ संबंध है। – (राजा) राधिकारमण प्रसाद सिंह।

'कार्यशाला में सुरक्षा एवं सावधानियां'

दिनेश कनोजे, चार्जहैंड मेकेनिकल, तिरोड़ी खान

स्वयं की सुरक्षा (Self Safety)

1. वर्कशॉप में कार्य करते समय जूतों का उपयोग करना चाहिए।
2. वर्कशॉप में कार्य करते समय ढ़ीले कपड़े नहीं पहनने चाहिए।
3. वर्कशॉप में कार्य करते समय घड़ी, टाई, चैन, बेल्ट आदि नहीं पहनना चाहिए।
4. जिस मशीन के बारे में जानकारी नहीं है, उस मशीन को चालू नहीं करना चाहिए।
5. चलती हुई मशीन की मरम्मत नहीं करनी चाहिए।
6. वर्कशॉप के अंदर चश्मा, हेलमेट का प्रयोग जरूर करना चाहिए।

औजारों की सुरक्षा (Tool Safety)

1. कार्यशाला में काम करने से पहले, सभी औजारों के बारे में पूरी तरह जानकारी होनी चाहिए।
2. नापने वाले (measuring tool) या फिर काटने वाले (cutting tool) औजारों को एक साथ नहीं रखना चाहिए।
3. औजारों को उपयोग लेने से पहले और बाद में उन्हें अच्छे तरीके से साफ करके रखना चाहिए।
4. औजारों पर ग्रीस और तेल इत्यादि नहीं लगाना चाहिए।
5. यदि किसी औजार की जरूरत नहीं है तो उसे टूल बाक्स में रख देना चाहिए।
6. बिना हैंडल वाले औजारों का उपयोग नहीं करना चाहिए।
7. खराब औजारों को काम में नहीं लेना चाहिए।

मशीन की सुरक्षा (Machine Safety)

1. जिस मशीन को हमें चालू करना है, उसके बारे में हमें पूरी जानकारी होनी चाहिए।
2. वर्कशॉप में रखी हुई मशीनों को प्रतिदिन साफ करना चाहिए।
3. जिस मशीन को लुब्रीकेशन की आवश्यकता है, उसके लुब्रीकेशन का पूरा ध्यान रखना चाहिए।
4. जिस मशीन को कूलिंग की आवश्यकता है, उसमें कूलिंग का ध्यान रखना चाहिए।
5. बिना जरूरत मशीन को नहीं चलाना चाहिए।
6. चालू मशीन को नहीं चलाना चाहिए।
7. कार्यशाला में मशीनों पर सुरक्षा कवच लगा होना चाहिए।

स्वतंत्रता दिवस

हिंदी पखवाड़ा

भारतेंदु का साहित्य मातृमंदिर की अर्चना का साहित्य है। – बदरीनाथ शर्मा।

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

विभिन्न कार्यालयी आयोजन

भाषा राष्ट्रीय शरीर की आत्मा है। – स्वामी भवानीदयाल संन्यासी।

हिन्दी मेरा अभिमान

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का... आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

हिमालय से हिंद महासागर तक मेरा हिंदुस्तान है।
हिंद का वासी मैं हूँ हिन्दी, हिन्दी ही मेरी पहचान है।

देववाणी संस्कृत से उपकृत
देवनागरी से रचती बसती है,
जन को जन से को जोड़ती
मन मुख मस्तिष्क में बसती है।
बारह स्वर इकतालीस व्यंजन जिसका विधान है।
हिंद का वासी मैं हूं हिन्दी, हिन्दी ही मेरी पहचान है।

माँ भारती की आरती उतारती
समर्पित साधक को ही तारती,
भावनाओं की सहज संवाहक
अपनाती सबको, नहीं टारती।
हिन्दी भाषा की सरलता ही हिन्दी का संविधान है,
हिंद का वासी हूँ मैं हिन्दी, हिन्दी ही मेरी पहचान है।

सकल विश्व में हिन्दी का विस्तार
हर हिंदुस्तानी का यही विचार।
विश्व संपर्क भाषा का मान मिले
विश्व पटल पर हो सदैव स्वीकार।
हिन्दी गौरव है हमारा हिन्दी ही हमारा सम्मान है।
हिंद का वासी हूँ मैं, हिन्दी ही मेरी पहचान है।

दिनेश कनोजे 'देहाती'
तिरोड़ी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481449
मो. 9893578322

तलवार के बल से न कोई भाषा चलाई जा सकती है न मिटाई। – शिवपूजन सहाय।

राजभाषा
कीर्ति पुरस्कार
पुरस्कृत

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार
वर्ष 2020–21
'ख' क्षेत्र के लिए द्वितीय पुरस्कार

मॉयल लिमिटेड, मॉयल भवन 1–ए, काटोल रोड, नागपुर–440013